RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 दिसम्बर 2023
डाक प्रेषण तिथि : 29 दिसम्बर 2023-01 जनवरी 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 18
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 64
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राग चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

साधु

साध्वी

गुरुचरणों का ले आधार,
करो भव पार, बढ़ाएँ तितिक्षा।

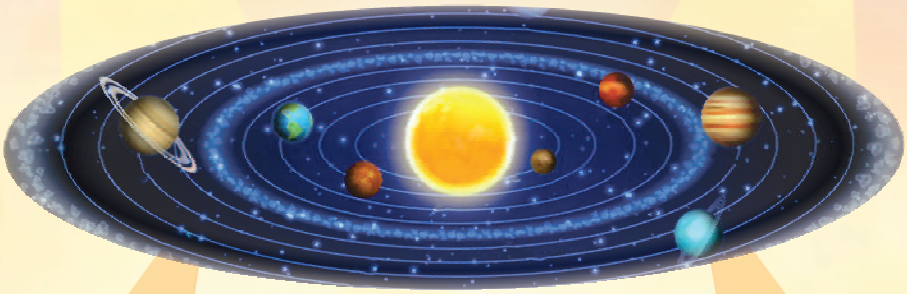

जन-जन करे संधान,
बने अब हर एक भाव महान।।
करें समीक्षा!

श्रावक

श्राविका

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धुकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

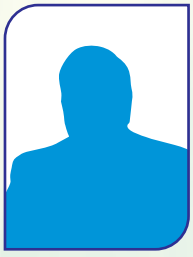

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव
MID No. 106053

स्व.श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर
MID No. 116416

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर
MID No. 127158

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व.श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

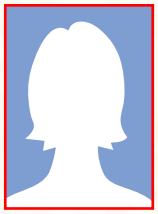
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

चतुर्थ चरण

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

श्री कमलजी बैद
मुंबई
MID No. 141022

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा- सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा- बदनावर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा- गुंडरदेही * श्रीमती मनोरमादेवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुंदरबाई कोटड़िया- कोंडागाँव * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री विजय कुमार जी गोलछा (कमलादेवी गोलछा)-बीकानेर * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता

भव्यातिभव्य
दीक्षा महोत्सव निवेदन

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में दिनांक **22 जनवरी 2024** को भव्य दीक्षा महोत्सव का आयोजन **जावद (म.प्र.)** में होना संभावित है। सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं एवं श्रीसंघों से करबद्ध निवेदन है कि इस अवसर पर परिवार सहित पधारकर दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर कर्मनिर्जरा के अद्भुत प्रसंग का लाभ लेवें। इस पावन अवसर पर पधारने से आपको अत्र विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हो पाएगा।

प्रीतेश बम्बोरिया	आवास-निवास	नैतिक कांठेड़
7693037788		9407442424

निवेदक

* श्री साधुमार्गी जैन संघ
* समता युवा संघ

जावद (म.प्र.)

* समता महिला मंडल
* समता बहू मंडल

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु श्रीमती कमलादेवी चंडालिया

नाम	:	मुमुक्षु श्रीमती कमलादेवी चंडालिया
जन्म स्थान	:	लावा सरदारगढ़, जिला राजसमंद
जन्म तिथि	:	06 मार्च 1957
वैराग्यकाल	:	लगभग 8 माह
व्यावहारिक शिक्षा	:	पी.एस.टी.सी. (सेवानिवृत्त शिक्षिका)
धार्मिक अध्ययन	:	पुच्छिंसु णं, श्री दशवैकालिक सूत्र के 6 अध्ययन, श्री उत्तराध्ययन सूत्र के 1 से 6, 9 से 11 व 31वाँ अध्ययन, उववाई सूत्र की 22 गाथाएँ, भक्तामर स्तोत्रम्, जैन सिद्धांत बत्तीसी, समकित के 67 बोल, 5 समिति 3 गुप्ति, लघुदंडक, जीवधड़ा, गति आगति, नवतत्त्व का थोकड़ा व अन्य छोटे-छोटे थोकड़े
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1-4
तपाराधना	:	अठाई 1, वर्षीतप 2, पचौला 1, तेले 50 से अधिक
संभावित दीक्षा तिथि	:	22 जनवरी 2024

पारिवारिक परिचय

पति	:	स्व. श्री समरथमल जी चंडालिया
दादा ससुर-सास जी	:	स्व. श्री इंदरमल जी-स्व. श्रीमती फूलबाई चंडालिया
ससुर जी-सास जी	:	स्व. श्री रोशनलाल जी-स्व. श्रीमती झनकारबाई चंडालिया
बड़े ससुर जी-सास जी	:	स्व. श्री सागरमल जी-नरकलबाई, स्व. श्री कन्हैयालाल जी-स्व. श्रीमती रोशनबाई चंडालिया
छोटे ससुर जी-सास जी	:	हिम्मतलाल जी-स्व. श्रीमती शंकरबाई, बसंतीलाल जी-लाडकँवर जी
देवर जी-देवरानी जी	:	स्व. श्री भोपालसिंह जी-विमलादेवी, चंद्रप्रकाश जी-चंदादेवी
पुत्र-पुत्रवधू	:	सुरजीत जी-रितु जी, बलवंत जी-अवनि जी, महावीर जी, मनीष जी-ज्योति जी, विनय जी-कीर्ति जी
पौत्र, पौत्री, दौहिता-दौहित्री	:	संयम (कार्तिक), रिद्धि, सिद्धि, समक्ष, स्वधा, श्रुति, रिद्म, हर्षिल, आनन
पुत्री-दामाद	:	सुमन जी-डॉ. मनोज जी झगड़ावत (डबोक), सरिता जी-मनोज जी मारू (सी.ए.) (सिंहपुर), प्रतिभा जी-विनीत जी सेठी (केकड़ी)
भुआ जी-फूफा जी	:	जतनबाई-स्व. श्री शांतिलाल जी बापना (भीलवाड़ा)
ननद जी-ननदोई जी	:	आजाददेवी-श्यामसिंह जी बापना (बिगोद)

पीहर पक्ष

पिता जी-माता जी	:	स्व. श्री मोहनलाल जी-स्व. श्रीमती सज्जनबाई चौरड़िया
भाई-भाभी	:	दिनेश कुमार जी-संजू जी, बलवंत कुमार जी-कांता जी
भतीजा-भतीजा वधू	:	चिराग जी-पूजा जी, श्रेय चौरड़िया
भतीजियाँ	:	श्रुति, सलोनी, कृतिका, धारवी चौरड़िया
बहिन-बहनोई	:	लहरीदेवी-स्व. श्री दौलतसिंह जी, रोशनदेवी-शांतिलाल जी, स्व. श्रीमती सुंदरदेवी-स्व. श्री समरथमल जी, सुशीलादेवी-राजमल जी, मुन्नादेवी-स्व. श्री हिम्मतलाल जी, शकुंतलादेवी-नरेंद्र कुमार जी, वनितादेवी-अशोक कुमार जी

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री ट्विंकल जी कामदार

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री ट्विंकल जी कामदार
निवास स्थान	:	आदिलाबाद (तेलंगाना)
जन्म तिथि	:	10 अगस्त 1994
वैराग्यकाल	:	लगभग 9 वर्ष
पद विहार	:	लगभग 300 किमी.
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.टेक. (इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन)
कार्यानुभव	:	लगभग 6 वर्ष (लीड सॉफ्टवेयर इंजीनियर, एप्टीमाइज़्ड प्रा.लि., हैदराबाद)
धार्मिक अध्ययन	:	श्री दशवैकालिक सूत्र, श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1 से 25 अध्ययन, पुच्छिंसु णं, श्री नंदी सूत्र (सूत्र 40 तक), **थोकड़े-** लघुदंडक, गति आगति, जीवधड़ा, 102 बोल का बासठिया, 98 बोल, जैन सिद्धांत बत्तीसी, भिक्षा के 110 दोष, अष्टप्रवचनमाता, समकित के 67 बोल, कायस्थिति, कर्मप्रज्ञप्ति एवं अन्य थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ	:	50 बोल के थोकड़े ओपन बुक परीक्षा, जैन सिद्धांत भूषण भाग-1, जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-1
संभावित दीक्षा तिथि	:	22 जनवरी 2024

पारिवारिक परिचय

दादा जी-दादी जी	:	स्व. श्री प्रभुदास जी-मंजुला जी कामदार
पिता जी-माता जी	:	स्व. श्री गिरिश जी-श्वेता जी कामदार
बड़े पिता जी-माता जी	:	प्रकाश जी-नीता जी कामदार
चाचा जी-चाची जी	:	स्व. श्री ललित जी-अल्का जी कामदार
भाई, बहिन	:	विपुल जी, याशिका जी, उर्वी जी, भव्या जी, राकेश जी
भुआ जी-फूफा जी	:	रमा जी-स्व. श्री किशोर जी मेहता, हर्षा जी-स्व. श्री कौशिक जी मेहता, कविता जी-जीतू जी शाह, कल्पना जी-पंचम जी मेहता
नाना जी-नानी जी	:	स्व. श्री उत्तमचंद जी-स्व. श्रीमती कांता जी शाह
मामा जी-मामी जी	:	हरीश जी-माला जी, रमेश जी शाह

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह	:	08
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र	:	13
चरण विहार विवेक	:	14
गुरुचरण विहार	:	18
विविध समाचार	:	30
महत्तम महोत्सव	:	38
विविध भेंट मार्फत	:	40
विनम्र श्रद्धांजलि	:	48
विहार सूची	:	51

सुविचार
कुसंगत

लड़की को आप चाहो, शील की बनाना देवी।
फिर न घुमाना कभी, आवारों के संग जी।।
याद रखो जल संग, रहे गर लोह कभी।
सावधान रहो चाहे, लग जाए जंग जी।।
भोगवादी पश्चिम की, आँधी चली जोरदार।
युवा कई हुए, खान-पान के बेढंग जी।।
वीर कहे गौतम से, बतलाओ सच-सच।
आपकी ही देवी कैसी होगी, उन संग जी।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

संवर का संरक्षित रूप

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

दूध चूल्हे पर चढ़ा हो, नीचे आँच हो, फिर भी उसमें उफान न आए, यह एक आश्चर्य हो सकता है। सामान्यतया ऐसा होता नहीं है। यदि ऐसा हो रहा है तो उसके पीछे कोई न कोई महत्त्वपूर्ण कारण होना चाहिए। उसमें से एक कारण दूध के बर्तन का फायर प्रूफ होना भी हो सकता है। यदि दूध के बर्तन को फायर प्रूफ बना दिया गया हो तो नीचे आँच होने पर भी उसके प्रभाव से दूध बचा हुआ है। इसलिए उसमें उफान नहीं आ रहा है। यह चमत्कार नहीं अपितु व्यवस्था का एक अंग है। यद्यपि दूध के बर्तन को सामान्यतया कोई फायर प्रूफ करता नहीं है, पर फायर प्रूफ हो तो निश्चित ही उसमें उफान नहीं आएगा। यह आज के युग का कोई भी व्यक्ति समझ सकता है। जैसे दूध का बर्तन फायर प्रूफ हो तो दूध उफनेगा नहीं, वैसे ही यदि मन को बाह्य प्रभाव से मुक्त रखने का लक्ष्य बना लें तो मन में न ऊहापोह पैदा होगी और न ही विचलन। मन प्रायः करके बाह्य प्रभावों से चंचल होता है। संवर रूपी साधन से उसे सुरक्षित कर दिया जाए तो मन पर बाह्य प्रभावों का असर हो नहीं पाएगा। बरसाती पहनने से जैसे शरीर पानी से गीला नहीं होता, वैसे ही संवर तत्त्व को साधने से मन बाह्य प्रभावों से विचलित नहीं होता।

मन की चंचलता का एक कारण अज्ञान भी है। तमस् में रहा हुआ मन सच्चाई को जान ही नहीं पाता। भारतीय संस्कृति का उद्घोष है- *'तमसो मा ज्योतिर्गमय'*। अंधकार की तरफ नहीं, ज्योति की तरफ बढ़ो। अंधकार अज्ञान है, ज्योति ज्ञान है। मन किन कारणों से चंचल होता है यह ज्ञात होने पर व्यक्ति उन कारणों को दूर करने में प्रयत्नशील बन सकता है। यदि वह उसके लिए प्रयत्नशील न बने तो समझना चाहिए कि अभी उसने केवल औपचारिक ज्ञान प्राप्त किया है। ज्ञान के प्रायोगिक रूप से ही उसका अनुभव हो पाता है, अन्यथा ज्ञान मात्र दिमागी बनकर रह जाएगा। कॉलेज के स्टूडेंट को यह तब अनुभव हुआ जब एक संत से उसका वास्ता हुआ। कथ्य यह है कि छात्र संतों को राष्ट्र के लिए कलंक मानता था। एक बार एक संत से सामना होने पर उसने उनको खूब सुनाया। संत ने प्रश्न पूछा- कोई माल को दोनों हाथों से लुटाए, पर कोई लेने वाला हो ही नहीं तो माल किसका रहेगा? इस प्रश्न से छात्र की बुद्धि तमस् से निकलकर ज्योतिर्मय बन गई। उसने आज समझा कि सहिष्णुता व धैर्य क्या होता है।

फाल्गुन कृष्ण 15/1, बुधवार, 09.03.2016 **साभार- आरोह** श्रमणोपासक

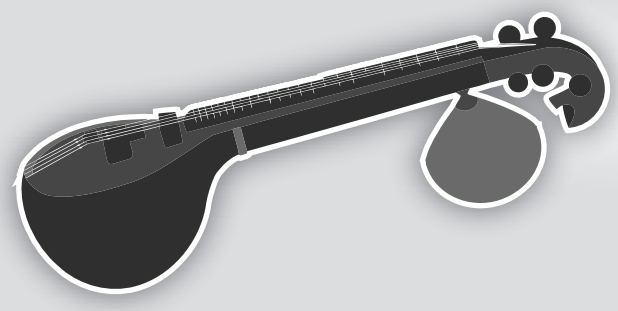

रुक्मिणी विवाह

नारद-लीला

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

29-30 नवम्बर 2023 अंक से आगे....

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैतिलक्ष्मीर्दैवेन
देयमिति कापुरुषाः वदन्ति।।

दृढ़ इच्छाशक्ति वाला मनुष्य जो चाहे कर सकता है। उसके लिए कोई कार्य असंभव है ही नहीं। साधारण लोग जिस कार्य को असंभव मानते हैं, दृढ़ इच्छाशक्ति वाला उसी कार्य को संभव करके बता देता है। कार्य करने की सच्ची लगन, कार्य करने का साहस, कार्य करने की क्षमता और योग्यता जिसमें है, वह मनुष्य असंभव से असंभव कार्य को भी संभव करके बता देता है। जिसमें इन विशेषताओं का अभाव है, उसके लिए तो छोटे से छोटा कार्य भी असंभव बन जाता है। तनिक विघ्न-बाधा और कष्टों से भय खाने वाला व्यक्ति किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

नारद भी दृढ़ निश्चयी थे। वे एक बार जिस काम को करने की इच्छा कर लेते थे, उस काम को करके ही रहते थे। फिर कितना ही विघ्न क्यों न आए। अपनी विलक्षण बुद्धि के बल से वे कार्य के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं को बात ही बात में मिटा देते थे और अपना उद्देश्य पूरा करते थे। उन्होंने कृष्ण के लिए दूसरी पटरानी खोजने का निश्चय किया तो आखिर यह योग्य कन्या खोज ही ली और इस ओर का मार्ग भी सुगम बना लिया। उन्होंने रुक्मिणी को पूरी तरह कृष्णानुरागिनी बना दिया, लेकिन नारद का उद्देश्य इतने से ही पूरा नहीं हुआ। वे तो रुक्मिणी को कृष्ण की पटरानी बनाना चाहते थे। यद्यपि रुक्मिणी को कृष्णानुरागिनी बनाकर नारद इस ओर से तो निश्चिंत हो गए, लेकिन अभी जिनकी पटरानी बनाना है उन कृष्ण की ओर से निश्चिंतता नहीं है। जब तक कृष्ण के हृदय में भी रुक्मिणी के प्रति प्रेम न हो और कृष्ण भी रुक्मिणी के साथ विवाह करना स्वीकार नहीं कर लें तब तक नारद का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। इसलिए रुक्मिणी को कृष्णानुरागिनी बनाने के पश्चात् नारद जी यह विचारने लगे कि अब कृष्ण के हृदय में रुक्मिणी के प्रति प्रेम कैसे उत्पन्न किया जाए और इस कार्य को सफलता की अंतिम सीढ़ी तक कैसे पहुँचाया जाए?

कृष्ण के हृदय में रुक्मिणी के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिए नारद जी उपाय सोचने लगे। वे विचारने लगे कि यदि मैं रुक्मिणी को कृष्ण के सम्मुख ले जाकर कृष्ण के हृदय में रुक्मिणी के प्रति प्रेम उत्पन्न करूँ तो यह ठीक नहीं होगा और कृष्ण स्वयं रुक्मिणी को देखने की इच्छा से आ नहीं सकते। ऐसी दशा में रुक्मिणी के प्रति कृष्ण के हृदय में प्रेम कैसे उत्पन्न किया जाए? इस प्रकार विचारते हुए नारद जी ने अंत में अपना कार्य सिद्ध करने का उपाय सोच ही लिया। उन्होंने विचारा कि जो कार्य रुक्मिणी को कृष्ण के पास ले जाने से हो सकता है, वही कार्य रुक्मिणी का चित्र ले जाने से भी हो सकता है। इसलिए रुक्मिणी का चित्र कृष्ण को बताकर उनमें रुक्मिणी के प्रति प्रेम उत्पन्न करना ठीक होगा।

नारद जी चित्रकला में भी निष्णांत थे। उन्होंने अपनी कला की सहायता से रुक्मिणी का चित्र बनाया। चित्र भी ऐसा बनाया कि देखने वाले मुग्ध हो जाए। नारद जी रुक्मिणी का नख से शिख तक का चित्र बना अपने साथ लेकर द्वारिका आए। चित्रपट को अपनी बगल में छिपाए हुए वे कृष्ण की सभा में गए। नारद जी को देखकर कृष्ण, बलदेव आदि सब लोग खड़े हो गए। सभी ने नारद जी को प्रणाम किया। कृष्ण ने नारद जी का स्वागत करके उन्हें सत्कारपूर्वक योग्य आसन पर बिठाया। पहले कुछ देर तक तो सम्मान और कुशल प्रश्न की बातें होती रहीं, परंतु नारद जी को तो अपने काम की जल्दी हो रही थी, इसलिए उन्होंने कृष्ण से कहा कि थोड़ी देर के लिए आप एकांत में चलिए, आपसे कुछ कहना है। नारद जी की बात मानकर कृष्ण उनके साथ बातें करते हुए एक सुंदर और एकांत स्थान में गए।

एकांत स्थान पर पहुँचकर **कृष्ण** ने नारद जी से कहा- हाँ महाराज! यह स्थान एकांत है। यहाँ मेरे और आपके सिवाय कोई मनुष्य नहीं है। अब आप जो बात कहना चाहते हैं, वह कहिए।

नारद जी- हाँ, अब कहता हूँ, आप सुनिए। इस समय भरत क्षेत्र में आपसे अधिक नीतिज्ञ दूसरा कोई नहीं है। आप नीतिशास्त्र के धुरंधर विद्वान माने जाते हें। इसलिए मैं जो बात कहूँ उसका नीतिपूर्वक उत्तर दें।

कृष्ण- हाँ महाराज! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार अवश्य ही आपकी बात का उत्तर दूँगा।

नारद जी- यह तो मुझे विश्वास है। अब मैं अपनी बात प्रारंभ करता हूँ। संसार में पुरुष, स्त्री और नपुंसक, ऐसे तीन प्रकार के मुनष्य हैं। नपुंसक के विषय में तो मुझे कुछ कहना नहीं है। जो कुछ कहना है वह पुरुष और स्त्री के विषय में ही कहना है। नीति अनुसार पुरुष और स्त्री का विवाह संबंध होता ही है, लेकिन यदि कोई अविवाहिता स्त्री किसी पुरुष विशेष के साथ विवाह करना चाहती हो, परंतु वह पुरुष उस कन्या के साथ विवाह नहीं करना चाहता हो तो क्या वह कन्या उस पुरुष के साथ बलात् विवाह कर सकती है?

कृष्ण- नहीं महाराज! ऐसा नहीं हो सकता। किसी पुरुष के साथ कोई भी स्त्री जबरदस्ती अपना विवाह नहीं कर सकती।

नारद जी- और यदि कोई पुरुष किसी कन्या के साथ विवाह करना चाहता हो, परंतु वह कन्या उस पुरुष के साथ विवाह नहीं करना चाहती हो तो क्या वह पुरुष उस कन्या के साथ जबरदस्ती विवाह कर सकता है?

कृष्ण- महाराज! ऐसा भी नहीं हो सकता। विवाह तो तभी हो सकता है जब पुरुष और कन्या, दोनों ही एक-दूसरे के साथ विवाह करने हेतु सहमत हों।

नारद जी- यदि कोई पुरुष या स्त्री एक-दूसरे से विवाह नहीं करना चाहते, फिर भी दोनों के माता-पिता या भाई या दोनों में से एक के माता-पिता अथवा भाई को क्या यह अधिकार है कि वे दोनों का विवाह करा दें?

कृष्ण- माता-पिता अथवा भाई को यह अधिकार कदापि नहीं है कि वे अपनी संतान या अपने भाई-बहिन का विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध करावें।

नारद जी- और यदि पुरुष तो कन्या को चाहता हो, परंतु कन्या उस पुरुष को नहीं चाहती हो तो क्या कन्या के माता-पिता अथवा भाई को यह अधिकार है कि वे उस कन्या का विवाह उस पुरुष के साथ कर दें, जिसके साथ वह कन्या विवाह नहीं करना चाहती है?

कृष्ण- महाराज! विवाह संबंध वर और कन्या दोनों की रुचि से हो सकता है। किसी एक की रुचि से कदापि नहीं हो सकता। बल्कि कभी-कभी कन्या की रुचि तो विशेषता भी पा जाती है, परन्तु उसकी रुचि के प्रतिकूल कदापि विवाह नहीं हो सकता। न ही किसी को कन्या की रुचि की अवहेलना करने का अधिकार है।

नारद जी- यदि कोई माता-पिता, भाई अथवा कन्या के साथ विवाह करने की इच्छा रखने वाला पुरुष कन्या की इच्छा को पददलित करे या करना चाहे तो?

कृष्ण- दंडनीय है। ऐसा करने वाले को दंड दिया जा सकता है।

नारद जी- दंड कौन दे सकता है?

कृष्ण- राजा।

नारद जी- और यदि राजा स्वयं ऐसा अन्याय करता हो तो, फिर कौन न्याय करे?

कृष्ण- वह सामर्थ्यवान व्यक्ति जिससे कन्या अपनी सहायता की याचना करे और जो राजा को भी दंड दे सकता हो।

नारद जी- एक कन्या को एक पुरुष अपनी पत्नी बनाना चाहता है, परंतु वह कन्या उसकी पत्नी नहीं बनना चाहती, किंतु दूसरे को ही अपना पति बनाना चाहती है और जिसे कन्या अपना पति बनाना चाहती है, वह पुरुष भी उस कन्या को अपनी पत्नी बनाना चाहता है, लेकिन वह पहला पुरुष, जिसे कन्या अपना पति नहीं बनाना चाहती, कन्या के साथ बलात् विवाह करना चाहता है। ऐसे समय में उस पुरुष का, जिसे कन्या अपना पति बनाना चाहती है और जो स्वयं भी कन्या को अपनी पत्नी बनाना चाहता है; क्या कर्त्तव्य है?

कृष्ण- उस पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह कन्या की इच्छा पर उस अत्याचार करने वाले से कन्या की रक्षा करे और उस कन्या को अपनी पत्नी बनाए।

नारद जी- यदि वह पुरुष अपने इस कर्त्तव्य का पालन नहीं करे तो?

कृष्ण- कर्त्तव्य पालन की शक्ति होते हुए भी जो अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता, वह कर्त्तव्यच्युत पाप का भागी होता है।

कृष्ण का उत्तर समाप्त होते ही नारद जी ने अपनी बगल में दबाया हुआ रुक्मिणी का चित्र कृष्ण के सामने पृथ्वी पर फैला दिया। रुक्मिणी का चित्र देखकर कृष्ण आश्चर्य में पड़ गए। वे यह निश्चय नहीं कर सके कि यह चित्र किसी मानवी का है अथवा अप्सरा का। उन्हें चित्र की स्त्री के सौंदर्य पर भी आश्चर्य हो रहा था और चित्रकार की निपुणता पर भी। उन्होंने नारद जी से पूछा- ''महाराज, क्या यह चित्र किसी अप्सरा का है और क्या इस चित्र को बनाने वाला चित्रकार कोई देव है? ऐसी सुंदर स्त्री और ऐसा कुशल चित्रकार इस मनुष्यलोक में होना तो कठिन है। स्त्री के इस चित्र के सौंदर्य ने मुझे मुग्ध कर लिया है। इस चित्र को देखकर मुझे अपनी रानियाँ भी तुच्छ लगने लगी हैं।''

नारद जी- हाँ कृष्ण! चित्र बहुत सुंदर है। जिसका चित्र है, उसकी सुंदरता और विशेषता तो चित्र में आ ही कैसे सकती है, परंतु चित्र को देखने से उसके संबंध की बहुत-सी बातों का अनुमान अवश्य हो सकता है।

कृष्ण- महाराज! यह चित्र किसका है और किस कुशल चित्रकार ने बनाया है?

नारद जी- आप चित्र और चित्र में चित्रित स्त्री की प्रशंसा तो कर रहे हैं, परन्तु पहले यह तो बताएँ कि इस चित्र की स्त्री में क्या विशेषता है और किन बातों को दिखाने से चित्रकार की निपुणता जानी जाती है? आप जब यह बात बता देंगे तब मैं भी आपको चित्रकार और चित्र की स्त्री का परिचय करवा दूँगा।

चित्र को एक बार फिर भली प्रकार देखकर **श्रीकृष्ण** कहने लगे- नारद जी! मैं केवल चित्र का रंग देखकर ही चित्रकार की प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ, किंतु उसने चित्र में जो विशेषताएँ बताई हैं, उनकी स्पष्टता के कारण ही मैं चित्रकार की प्रशंसा करता हूँ। इसी प्रकार इस चित्र की स्त्री की प्रशंसा भी सुंदरता और शारीरिक रचना से ही कर रहा हूँ। जान पड़ता है कि संसार के समस्त सौंदर्य को इस एक ही स्त्री ने छीन लिया है। संभवत: चंद्र इस स्त्री के कारण ही आकाश को भाग गया, क्योंकि इसके मुख ने उसकी कांति फीकी कर दी है। इसके केशों की वेणी ने मोरपुच्छ को भी लज्जित कर दिया है। इसी कारण मोर लज्जित होकर वन में रहने लगा है। इसकी तिरछी भौंहों ने भँवरियों की शोभा हरण कर ली है। इसी से भँवरियाँ मनुष्यों से रुष्ट रहती हैं और उन्हें काट लेती है। अब तक मृग के नेत्र ही अच्छे माने जाते

थे, लेकिन इस स्त्री के नेत्रों ने मृग का अपने नेत्रों पर गर्व भंग कर डाला। इससे खेद पाकर मृग वन में जाकर अपना जीवन व्यतीत करने लगे। इसकी नाक ने सुए की चोंच के पतलेपन को भी जीत लिया। इसी कारण सुए मनुष्यों से दूर वृक्षों पर निवास करने लगे। इसके दाँतों के सामने अपने को तुच्छ मानकर दाड़िम के दाने छिलकों के भीतर छिप गए। इसके होंठों की ललाई के आगे मूंगे की ललाई फीकी पड़ गई। इसलिए मूंगे समुद्र में जा गिरे। कच्छप की ग्रीवा का सौंदर्य, इस कामिनी की मनोहारिणी ग्रीवा ने छीन लिया। अपनी गर्दन का सौंदर्य छिप जाने से दु:खित होकर कच्छप जल में छिपकर रहने लगा। इसकी कोमल बाँहों को देखकर माला मुरझा गई। इस मत्स्योदरी का पेट देखकर मछलियाँ पानी में ही रहने लगीं। यमुना के भँवर की शोभा इस स्वरूपा की नाभि ने छीन ली। इसलिए क्रोध के मारे यमुना का रंग नीला हो गया। इसकी कमर का पतलापन देखकर केहरी मनुष्यों से द्रोह रखने लगा। इसकी जंघा ने हाथियों की सूंड़ों को लज्जित कर दिया। इसलिए हाथी धूल उड़ाने लगे। इसके वर्ण की समानता न कर सकने के कारण सोना पृथ्वी के गर्भ में जा छिपा। मैंने इस चित्र की स्त्री को इन्हीं विशेषताओं से सुंदरी बताया है और चित्रकार ने विशेषताओं को स्पष्ट चित्रित किया है। इसलिए चित्रकार की भी प्रशंसा की है। अब आप यह बतलाएँ कि यह सुंदरी कौन है और इसका चित्र बनाने वाला चित्रकार कौन है?

नारद जी- आपने इस स्त्री के सौंदर्य का ठीक ही वर्णन किया है। वास्तव में यह स्त्री ऐसी ही सुंदरी है। जहाँ तक सूर्य के प्रकाश की गति है, मैं वहाँ तक भ्रमण करता हूँ, परंतु मुझे ऐसी सुंदर स्त्री दूसरी कहीं नहीं दिखी।

कृष्ण- यह तो मैं भी मानता हूँ, परंतु यह स्त्री है कौन और यह चित्र किसने बनाया है?

नारद जी- चित्रकार तो आपके सामने बैठा है।

कृष्ण- अच्छा, यह चित्र आपने बनाया है! आप चित्रकला में ऐसे निपुण हैं, यह बात तो मुझे आज ही मालूम हुई। वास्तव में ब्रह्मचारी के लिए संसार का कोई कार्य कठिन नहीं है, लेकिन यह स्त्री कौन है?

नारद जी- यह विदर्भ देश स्थित कुण्डिनपुर के राजा भीम और रानी शिखावती की कन्या है। इसका नाम रुक्मिणी है। यह जैसी सुंदरी है, वैसी ही गुणागारी भी है।

कृष्ण- यह कुँवारी है या विवाहिता?

यद्यपि कृष्ण के लिए चित्र से यह जानना कठिन नहीं था कि यह चित्र विवाहिता का है या कुँवारी का। फिर भी कृष्ण ने नीति का पालन करने के लिए यह प्रश्न किया। उन्होंने विचारा कि चित्र से तो यह कुँवारी जान पड़ती है, लेकिन संभव है कि इसने किसी को पति बनाने का निश्चय कर लिया हो।

कृष्ण की बात के उत्तर में नारद जी कहने लगे- मैंने इसी के लिए आपसे प्रश्न किए थे। यह अभी तो अविवाहिता है, परंतु इसके भाई ने अपने पिता और इसकी इच्छा के विरुद्ध इसका विवाह चन्देरीराज शिशुपाल से ठहराया है तथा अमुक तिथि को विवाह होना भी तय हो गया है। रुक्मिणी शिशुपाल को स्वप्न में भी नहीं चाहती। उसने निश्चय किया है कि मेरे लिए कृष्ण ही पति हैं। कृष्ण के सिवाय शेष पुरुष मेरे लिए भ्राता और पिता के समान हैं। उसके हृदय में आपके प्रति अपार अनुराग है। राजा भीम की इच्छा भी रुक्मिणी का विवाह आपके ही साथ करने की थी और रुक्मिणी का विवाह आपके साथ करने का प्रस्ताव भी उन्होंने सबके सम्मुख रखा था, परंतु मूर्ख रुक्म ने अपने पिता के इस प्रस्ताव का विरोध किया। परिणामत: गृह कलह से बचने के लिए राजा भीम रुक्मिणी के विवाह की ओर से तटस्थ हो गए। भीम की इस शांतिप्रियता का अनुचित लाभ उठाने के लिए रुक्म ने अपने मित्र शिशुपाल के साथ रुक्मिणी का विवाह तय किया है। यद्यपि शिशुपाल को भी यह मालूम हो चुका है कि रुक्म ने यह विवाह का टीका अपने पिता से विरोध करके भेजा है तथा रुक्मिणी भी मुझसे विवाह करना नहीं चाहती है, फिर भी उसने रुक्मिणी के विवाह का टीका स्वीकार कर लिया है और विवाह की तैयारी कर रहा है।

कृष्ण के हृदय में रुक्मिणी के चित्र से ही रुक्मिणी के प्रति आकर्षण हो चुका था। नारद की बातों से वह आकर्षण और बढ़ गया। वे रुक्मिणी के प्रेम के रंग में रंग गए। रुक्मिणी के प्रति कृष्ण के हृदय में उत्पन्न प्रेम ने कृष्ण को अधीर-सा बना दिया। वे नारद जी से फिर पूछने लगे कि क्या शिशुपाल रुक्मिणी की इच्छा के विरुद्ध उसको अपनी पत्नी बनाना चाहता है?

नारद जी- हाँ।

कृष्ण- यदि ऐसा है तब तो शायद उससे युद्ध भी करना पड़े।

नारद जी- हाँ।

कृष्ण- परंतु रुक्मिणी के हृदय में मेरे प्रति प्रेम हो, तब भी जब तक वह मुझसे सहायता की याचना न करे तब तक मैं क्या कर सकता हूँ?

नारद जी- रुक्मिणी को आपसे प्रेम होगा तो वह आपसे सहायता मांगेगी ही।

कृष्ण- कदाचित् रुक्मिणी ने सहायता मांगी भी तब भी एकदम से शिशुपाल से युद्ध करना कैसे उचित होगा? कम से कम उसे यह तो सूचित कर देना चाहिए कि वह इस प्रकार का अन्याय नहीं करे।

नारद जी- यह तो मैं आपके बिना कहे ही कर दूँगा। इससे आगे आप जानें और रुक्मिणी जानें।

यह कहते हुए नारद जी रुक्मिणी का चित्र लेकर वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गए। अपने सामने से रुक्मिणी का चित्र हटते और नारद जी के अन्तर्ध्यान होते ही कृष्ण बहुत व्यथित हुए। उनके लिए उस चित्र का वियोग असह्य हो उठा। वे उस चित्र की मनोहारिणी मूर्ति को अपनी मानसिक आँखों के सामने से नहीं हटा सके।

रुक्मिणी के प्रेम से आकर्षित कृष्ण उस स्थान से घर आए। रुक्मिणी की प्राप्ति की चिंता के साथ ही उनके दिमाग में एक विचार और उठा। वे सोचने लगे कि रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल के साथ होना तय हो चुका है और शिशुपाल बुआ का लड़का भाई है। उसके साथ रुक्मिणी का विवाह नहीं होने देकर अपने साथ रुक्मिणी का विवाह कर लेना क्या ठीक है? हो सकता है कि बड़े भ्राता बलदेव जी तथा उनके साथ ही परिवार के और लोग भी मुझसे रुष्ट हो जाएँ। इस प्रकार कृष्ण के हृदय में जहाँ एक ओर रुक्मिणी की रक्षा की चिंता हो रही थी, वहीं पारिवारिक कलह की आशंका भी उन्हें व्यथित कर रही थी।

इन दोनों चिंताओं के कारण कृष्ण ने खाना-पीना भी कम कर दिया। उनके शरीर पर चिंता और दुर्बलता के चिह्न स्पष्ट दिखाई देने लगे। रुक्मिणी संबंधी बहुत कुछ समाचार बलदेव जी भी सुन चुके थे। कृष्ण को चिंतित और दुर्बल देखकर बलदेव जी समझ गए कि इन्हें रुक्मिणी के लिए चिंता है। उन्होंने कृष्ण से कहा कि मेरी समझ से आपको रुक्मिणी के लिए ही चिंता है। मैं सुन चुका हूँ कि रुक्मिणी आप ही को पति बनाना चाहती है, शिशुपाल को नहीं चाहती। यदि आप इसलिए चिंतित हैं तो इस विषय में आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। जब रुक्मिणी शिशुपाल को नहीं चाहती, तब शिशुपाल उसके साथ कदापि विवाह नहीं कर सकता। शिशुपाल यदि स्वयं समझ जाएगा और रुक्मिणी के साथ जबरदस्ती विवाह करने का विचार त्याग देगा तब तो ठीक है, नहीं तो जिस तरह भी बनेगा हम रुक्मिणी के साथ जबरदस्ती करने से उसे रोकेंगे और रुक्मिणी की सहायता करेंगे। हाँ, इतनी बात अवश्य है कि जब तक रुक्मिणी की ओर से किसी प्रकार का समाचार हमारे पास नहीं आए, तब तक हमें बीच में पड़ना ठीक नहीं है और रुक्मिणी की ओर से समाचार आने के पश्चात् हमें मृत्यु से भी लड़कर रुक्मिणी की रक्षा करनी होगी।

बलदेव जी की बात सुनकर पारिवारिक क्लेश की आशंका मिट जाने से कृष्ण को प्रसन्नता हुई। उन्हें इस ओर से चिंता नहीं रही। अब वे रुक्मिणी की ओर से किसी प्रकार का समाचार आने की ही प्रतीक्षा करने लगे।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमशः श्रमणोपासक

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 नवंबर 2023 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

श्रीमद् भगवती सूत्र प्रश्नोत्तरी का क्रम प्रत्येक माह के धार्मिक अंक में समाहित किया जा रहा है, जिसे उसी क्रमानुसार अब से समाचार अंक में प्रस्तुत किया जाएगा। यही शुभेच्छा है कि पाठकगण इसके अध्ययन से अपने तात्त्विक ज्ञान में वृद्धि करें।

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

केवलज्ञान

प्र.2402 तीर्थ किसे कहते हैं?

उत्तर 1. संसार समुद्र से तिराने वाले धर्म को,
2. तीर्थंकरों के वचन (श्रुतज्ञान) को,
3. प्रथम गणधर को और
4. साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ को तीर्थ कहते हैं। संघ की विद्यमानता में जो सिद्ध होते हैं, वे 'तीर्थ सिद्ध' कहलाते हैं।

प्र.2403 स्वलिंग किसे कहते हैं?

उत्तर स्वलिंग दो प्रकार का है- द्रव्य लिंग और भाव लिंग। रजोहरण, मुखवस्त्रिकादि द्रव्य लिंग है और सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप भाव लिंग है। भाव लिंग आए बिना तो कोई भी सिद्ध नहीं हो सकता है। अत: स्वलिंग सिद्ध में द्रव्य लिंग विवक्षित है।

प्र.2404 परम्पर सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तर पर यानी दूसरा। जिनको सिद्ध हुए दो, तीन आदि समय हो गए, वे परंपर सिद्ध हैं।

प्र.2405 परम्पर सिद्ध केवलज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर परम्पर सिद्ध केवलज्ञान के 13 भेद हैं-
1. अपढम समय सिद्ध, 2. द्वितीय समय सिद्ध यावत्, 10. दस समय सिद्ध, 11. संख्यात समय सिद्ध, 12. असंख्यात समय सिद्ध और 13. अनंत समय सिद्ध।

प्र.2406 अपढम समय सिद्ध का क्या तात्पर्य है?

उत्तर 1. सिद्धत्व का प्रथम समय विग्रहगति में होता है। इसलिए विग्रहगति वाले सिद्ध, प्रथम समय सिद्ध होते हैं।
2. सिद्ध गति में पहुँचने का प्रथम समय किंतु सिद्धत्व प्राप्ति के दूसरे समय वाला जीव अपढम सिद्ध कहलाता है।
3. परम्पर सिद्ध के प्रथम समय को अपढम समय सिद्ध कहते हैं।
4. सिद्धत्व प्राप्ति के तीसरे समय वाला जीव परम्पर सिद्ध के द्वितीय समय वाला होता है। इसी प्रकार शेष समयवर्ती परंपर सिद्धों का उपयोगपूर्वक कथन करें।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

- क्रमश:

चरण विहार-विवेक

-पदमचन्द गाँधी, जयपुर

पानी जब यात्रा पर निकलता है तो झरना बनता है, नदी बनता है और फिर महासागर बनकर अपने लक्ष्य में समा जाता है। दर्द जब यात्रा पर निकलता है तो आह बनता है, आँसू बनता है और फिर करुणा में परिणत हो जाता है। साँस जब यात्रा पर निकलती है तो जन्म बनती है, जीवन बनती है और जीवन बनकर विदा लेती है। संत जब यात्रा पर निकलता है तो साधक बनता है, समाधि बनता है और संतवाणी बनकर विदा लेता है। जो कुछ भी है इस संसार में वह यात्रा पर है। उसका कोई न कोई प्रस्थान बिन्दु है और लक्ष्य बिन्दु भी। जो साधक प्रस्थान बिन्दु और लक्ष्य बिन्दु के बीच में यात्रा करता है या तो दूसरों के पदचिह्नों पर चलता है या फिर अपने पदचिह्न बनाकर छोड़ता है।

लक्ष्य यदि महान है, उसे प्राप्त करने के लिए साधक भी किसी को कष्ट देने वाला नहीं है तो यात्रा महान हो जाती है। श्रमणों द्वारा की जाने वाली यात्रा (चाहे छोटी हो या बड़ी) का लक्ष्य संयम-साधना एवं मोक्ष का होता है, परमार्थ का होता है, कल्याण का होता है तो यात्रा छोटी होकर भी बड़ी हो जाती है, वन्दनीय एवं पूजनीय बन जाती है। जब पाँव लक्ष्य को पाने के होते हैं तो लक्ष्य भी उन संकल्पी चरणों के अभिनन्दन को प्रस्तुत होता है। समय के रथ पर इतिहास का रथ बढ़ता है। श्रमण सूर्य का प्रतीक होता है, क्योंकि श्रमण और सूर्य दोनों बिना किसी भेदभाव के जिनवाणी एवं प्रकाश का प्रसाद गाँव-गाँव, नगर-नगर जाकर बाँटते हैं।

श्रमण यात्रा का विचार संकल्प है और चलने के लिए बढ़े चरण उस संकल्प की साधना। संकल्प की साधना, निरंतरता के क्षण ही जीवन के क्षण होते हैं। प्रतिपल बढ़ते क्षण में बिना बढ़े क्षण को साध लेना ही समय की पहचान है। हर पल को अपने पाँवों में रखना, हर चरण में क्षण को सार्थक आयाम देना ही प्रगतिशीलता है। संत सार्थक गति पर गमनागमन करते हैं, जिससे मंजिल भी उनका स्वागत करती है। संत अतिथि होता है। संत समय को बिखेरता नहीं अपितु समेटता हुआ अपने ऊर्जा केंद्रों में एक-एक साँस के समान वितरण व्यवस्था करता है। क्योंकि वह जानता है संसार का हर आरोह-अवरोह जीवन का मूलाधार है। हर साँस को सार्थकता के आगे न्योछावर करना है। संत किसी व्यामोह में बंधे बिना अपने पाँवों से गति करते हुए आगे बढ़ता है। गति पूजनीय होती है। गति ही संत जीवन की प्रवाही प्रेरणा है। अपनी प्रेरणा का प्रसाद गाँव-गाँव, नगर-नगर, वन-उपवनों में बाँटता हुआ वह पगडंडी से पथ पर चलता रहता है। जो सिद्धांत, अनुभूतियों के आलोक पथ से गुजरता है वही लोकग्राह्य होता है। महावीर की अहिंसा, ज्ञान की भाषा को संत अनुभूतियों के सहजभाव से प्रत्येक प्राणी की मौन पीड़ा को मानवीयकरण द्वारा प्रस्तुत करता है। संतों का जीवन-चारित्र, उनकी यात्राएँ उस संजीवनी की भाँति होती है जो मृत में भी जीवन संचार करने का सामर्थ्य रखती है, क्योंकि उनके पग-पग पूजनीय होते हैं, जिसका कारण है- संयम, लक्ष्य है मोक्ष तथा परिणाम है करुणा, अहिंसा व विवेक। संत की हर यात्रा मानवता को जोड़ती

है, करुणा से ओतप्रोत होती है, प्रकृति संरक्षण वाली होती है और जीवों की विराधना से बचाने वाली होती है।

विचरण-विहार क्यों?

श्रमण नवकल्पी होते हैं। अष्टप्रवचन माता की ईर्यासमिति के अनुसार गमनागमन करते हैं। विहार का प्रमुख उद्देश्य है- संयम की सुरक्षा तथा आराधना की तेजस्विता। जो विहार संयम की साधना को भंग करके होता है, वह चारित्र को दूषित बनाता है और आसक्ति में वृद्धि करता है। वह विहार नहीं, पर्यटन यात्रा बन जाता है। सच्चे संयमी का विहार, स्व-पर के लिए मंगलमयी होता है। वस्तुत: विचरण-विहार पाप का उदय नहीं, संयम का पुनीत पुरुषार्थ है। विहारचर्या चारित्राचार का ही अंग है। श्रमण पंचाचार का पालन करते हैं। मुनि चरण विहारी होते हैं, वाहन विहारी नहीं। ईर्यासमिति का पालन चरण-विहार से ही संभव है। इसलिए वाहन निषिद्ध है।

बहता पानी निर्मला, पड़ा गन्दला होय।
साधु तो रमता भला, दोष न लागे कोय।।

अर्थात् बहता पानी निर्मल होता है, बहाव के कारण शुद्धि की प्रक्रिया विशेष वेग से चलती है। इसी प्रकार साधु विहार करते हुए यदि संयम में दृढ़ आस्था वाले हों तो चारित्र में निर्मलता बनी रहती है। चरण-विहार से चारित्र की सुरक्षा, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ होते हैं। साधक श्रम का अभ्यासी होता है, स्वावलंबी बनता है। धर्मोपकरण स्वयं उठाने के कारण संग्रहवृत्ति को विराम मिलता है। मानसिक दृष्टि से साधक के मन में साहस की वृद्धि होती है। कष्ट-सहिष्णुता का विकास होता है।

विहार के दौरान दु:खी जीवों को देखने के कारण अनुकम्पा का भाव जाग्रत होता है, संवेदनाएँ बढ़ती हैं, वैराग्य एवं संवेग की पुष्टि के प्रबल निमित्त मिलते हैं। श्रमण जीवन में गमनागमन की प्रवृत्ति अपरिहार्य होती है। उनका गमनागमन निर्दोष बनें, पाप के भागीदार नहीं बनें। इस संबंध में गति संबंधी सावधानी, जागरूकता, शास्त्रोक्त नियमों के पालन की तत्परता एवं यतनापूर्वक उपयोग प्रवृत्ति हेतु ईर्यासमिति के पालन का निर्देश दिया गया है। मुनि की गमन प्रवृत्ति को अहिंसक बनाए रखने के लिए, जीवों को अभयदान देने के लिए, जीवों की रक्षा के लिए, त्रस एवं स्थावर जीवों को बचाने के लिए साढ़े तीन हाथ-चार हाथ जमीन (युग मात्र जमीन) आगे देखते हुए गमन करने का प्रावधान है।

चरण-विहार हेतु श्रमण का तथा श्रावक का विवेक महत्त्वपूर्ण होता है। श्रमण स्वयं ईर्यासमिति के अनुसार पालन करे तथा श्रावक विवेक का ध्यान रखकर विचरण-विहार में श्रमण की संयमचर्या की सुरक्षा में सहायक बनें।

विहार में श्रमण का विवेक

उत्तराध्ययन सूत्र अ. 24 गाथा 4 के अनुसार-

आलंबणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ य।
चउ-कारण-परिसुद्धं, संजए ईरियं रिए।।

अर्थात् श्रमण विहार करते समय आलंबन शुद्धि, काल शुद्धि, मार्ग शुद्धि और यतना शुद्धि, इन चारों बातों का ध्यान रखते हुए गमनागमन करते हैं।

1. आलंबन शुद्धि : आलंबन शुद्धि बनाए रखने के लिए मुनि निष्काम गमनागमन करें। मुनि के गमनागमन का प्रयोजन (आलंबन) ज्ञान, दर्शन, चारित्र हो। ज्ञान की वृद्धि के लिए अन्य स्थान में रहते हुए गीतार्थों के पास जाना, स्वाध्याय के लिए एकांत स्थल पर जाना, वाचना देने या लेने हेतु गमनागमन करना आलम्बन है। दर्शन की सुरक्षा एवं सम्यक्त्व की वृद्धि के लिए तथा कुदर्शन विवर्जन के लिए गमनागमन दर्शनावलम्बन है। इसी प्रकार चारित्र के लिए गमनागमन चारित्र आलम्बन है। एक स्थान पर रहने से मोह में वृद्धि हो सकती है, क्षेत्र विशेष से लगाव हो सकता है। अत: इसके निवारणार्थ गमनागमन जरूरी होता है। आहार आदि की प्राप्ति, शारीरिक बाधाओं की निवृत्ति हेतु

गमनागमन जरूरी है।

2. काल शुद्धि : श्रमण दिन के समय ही विहार करे। रात्रि में विचरण नहीं करे तथा विचरण सूर्योदय पश्चात् करे। रात्रि में विहार करने से सूक्ष्म, त्रस और स्थावर जीवों की तथा रात्रि में बरसने वाले सूक्ष्म अप्काय जीवों की रक्षा नहीं हो सकती। अत: रात्रि में विहार निषिद्ध है। रात्रि में लघुशंका आदि की निवृत्ति के लिए, वस्त्रों से शरीर को आच्छादित करके, रजोहरण से भूमि का प्रमार्जन करता हुआ तथा दिन में पूर्व देखे हुए स्थान में निवृत्ति के लिए जाए तथा तत्काल स्व-स्थान पर आ जाए।

3. मार्ग शुद्धि : मुनि उसी मार्ग पर चले जहाँ अधिकांश लोग गुजरते हो, राजमार्ग हो, सुगम रास्ता हो, उन्मार्ग पर गमनागमन नहीं करे, क्योंकि इस पर चलने से षट्काय के जीवों की विराधना होती है। जिस मार्ग पर खड्डे, उबड़-खाबड़, काँटें, ठूँठ आदि हों उस पर नहीं चले। जिस मार्ग में कीचड़ हो, अस्थायी व्यवस्था हो, उस मार्ग पर नहीं चले। विषम पथ, घने जंगल आदि में विचरण नहीं करे। सचित्त मिट्टी, सचित्त जल, बीज या अन्य प्रकार की वनस्पति हो, उस मार्ग पर नहीं चले।

4. यतना शुद्धि : उपयोगपूर्वक चलना यतना शुद्धि है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से यतनापूर्वक सावधानी से गमनागमन करना श्रमण के लिए जरूरी होता है। वह नीचे देखते हुए मार्ग का शोधन करते हुए चले। देह प्रमाण भूमि (युग प्रमाण-4 हाथ भूमि) आगे देखते हुए चले। रात्रि में प्रमार्जन तथा दिन में भलीभाँति देखते हुए चले तथा चलते समय मन में अन्य विचारों को लेकर नहीं चले। अन्य विचारों में व्यस्त रहने से यतना नहीं होती है। अत: श्रमण गमनागमन करते समय दस बोल वर्ज (त्याग) कर चले, वार्तालाप नहीं करे। वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा तथा धर्मकथा नहीं करे। इनकी यतना नहीं करे तो हिंसा का दोष लगता है। आगमों में लिखा है- "**जिअदु वा मरदु वा जीवो अजदाचारस्यनिच्छिओ हिंसा पयदस्यणत्थिं बंधो हिंसादित्तेण समिदस्स**" अर्थात् जो यतनाशील नहीं है, चाहे जीव मरे या नहीं, उसको हिंसा का दोष लगता है। लेकिन जो यतनाशील है, उपयोग से प्रवृत्ति कर रहा है, उसे जीव वध होने पर भी बंध नहीं होता। यदि ऐसा होता है तो उन्हें प्रायश्चित्त लेना होता है। इस प्रकार स्पष्ट है संयमी साधक की विचरण करते समय वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श या राग-द्वेष आदि में रुचि या प्रतिबद्धता नहीं होती। जब तक शरीर सबल है, निरोगी है, सभी इन्द्रियों का बल विद्यमान है तब तक साधक को सतत विहार करते रहना चाहिए। इसी में संयम की सुरक्षा तथा आराधना की विश्वसनीयता है। विहार करते समय साधक यदि विहार का उद्देश्य नहीं समझता, उद्देश्य की उपेक्षा करता है तो अनेक दोषों का भागीदार हो जाता है।

विहार में कई प्रकार के परीषह आते हैं। कठिनाइयों का सामना करता पड़ता है। ऐसे समय में लक्ष्य की दृढ़ता जरूरी होती है। अन्यथा संयमी का मनोबल टूट सकता है। अत: लक्ष्य को समझकर कर्त्तव्यबोध के अनुसार कष्टों को सहिष्णुता से सहते हुए समताभाव से विचरण करे।

विहार में श्रावक का विवेक

श्रावक का दायित्व होता है कि वे श्रमणों के विहार के दौरान उनके संयम की सुरक्षा में सहयोगी बनें। वर्तमान समय में ट्रेफिक की समस्या बढ़ती जा रही है। कई साधु-साध्वी दुर्घटना के शिकार हो कालधर्म को प्राप्त हो जाते हैं। संत, श्रावक, संघ व समाज की धरोहर हैं। इनकी सुरक्षा का ध्यान रखना श्रावक का परम कर्त्तव्य भी है और धर्म भी। अत: श्रावकों को विशेषत: युवकों को चाहिए कि अपने-अपने क्षेत्र में चारित्रात्माओं का विचरण-विहार करवाएँ।

विचरण करते समय जहाँ निर्दोष एवं सुरक्षित स्थान उपलब्ध हो, संत-सतियों को वहाँ रुकवाने में सहयोग प्रदान करें।

हर क्षेत्र में विहार-विचरण के लिए मार्ग की जानकारी, जैन घरों की संख्या, रुकने के स्थान की जानकारी, अजैन शाकाहारी गोचरी लायक घरों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर श्रमणों को बताएँ, जिससे साताकारी अनुकूल स्थितियाँ बन सके।

विहार की दृष्टि से संघ या समिति आस-पास के गाँव, नगर के डॉक्टरों से सम्पर्क बनाए रखें, जिससे वैयावच्च-सेवा का लाभ प्राप्त हो सके। श्रमणों के स्वास्थ्य की जाँच भी समय पर हो सके, हारी-बीमारी का उपचार भी तुरंत हो सके।

विहार के दौरान रात्रि में ठहराव के समय संत-सतियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी संघ की होती है। इसका पूरा ध्यान रखे। संतों के विहार के समय राजमार्ग का उपयोग करें, वाहनों से बचने के लिए साथ में चलने वाले युवा संकेतों के माध्यम से ट्रैफिक से बचाव करें।

इस प्रकार उपरोक्त कारणों से श्रावक '**विहार सेवा-जिनशासन सेवा**' के भागीदार बन सकते हैं। अपने विवेक का उपयोग करते हुए संयमित श्रमणों के चारित्रधर्म की सुरक्षा में सहभागी बनकर अपने कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं। अत: श्रमणधर्म की सुरक्षा के भागीदार अवश्य बनें, यही विहार-विचरण विवेक है। श्रमणोपासक

आत्मचिंतन : महत्तम महोत्सव में हमारा योगदान

आप सभी को ज्ञात ही है कि शास्त्रज्ञ, तरुणतपस्वी, प्रशांतमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ दीक्षा दिवस 'आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा-महोत्सव महत्तम महोत्सव' के रूप में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में मनाया जा रहा है। इस महोत्सव का आगाज आषाढ़ सुदी 15 वि.सं. 2079 तदनुसार दिनांक 13 जुलाई 2022 को हुआ। इस महोत्सव की आराधना हेतु महापुरुषों द्वारा निम्नलिखित नौ बिंदु प्रश्न किए गए-

1. ज्ञानार्जन, 2. स्वाध्याय, 3 तप-त्याग, 4. व्रत-विवेक, 5. संस्कार, 6. जन-जन में राम, 7. संघ विस्तार व सशक्तिकरण, 8. सामाजिक, 9. गुदड़ी के लाल।

इस महोत्सव के इन नौ बिंदुओं में लगभग प्रत्येक मनुष्य की रुचि एवं विशेषता की अनुरूपता को ध्यान में रखा गया है। अब यह पहचान आपको स्वयं करनी होगी कि आप इन में से कौन-सी विधा में रुचि रखते हैं और उससे अपने जीवन को सही आयाम प्रदान कर सकते हैं। इस आयाम को प्रारंभ हुए लगभग 18 माह बीत चुके हैं और 15 माह शेष हैं। यानी जितना समय बीत चुका है उतना अब हमारे हाथ में नहीं है। अत: हम अब चेतें और शेष रहे समय का सार्थक उपयोग कर गुरुचरणों में हमारी ओर से अर्घ्य अर्पित करें। आप चाहें उस बिंदु या अनेक बिंदुओं से इस आयाम से जुड़ सकते हैं।

तो अब देरी किस बात की? उठो, चलो, बढ़ो और प्राप्त कर लो अपना जीवन लक्ष्य। गुरुवर ने तो अपना स्वयं का और अन्य भवीजनों का आत्मकल्याण करने का मार्ग प्रशस्त कर लिया है। हम और आप अब भी इस मार्ग से अनजान हैं तो ये हमारा कर्मविपाक है। अपनी झिझक मिटाएँ। यदि कोई बिंदु समझ में नहीं आ रहा तो महत्तम महोत्सव की टीम से संपर्क करें और सच्ची समर्पणा का परिचय देते हुए महत्तम महोत्सव का भाग बन जाएँ।

-श्रमणोपासक टीम

युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का नीमच चातुर्मास सम्पन्न होने के पश्चात् गाँव-गाँव में धर्म जागरण हेतु पद-विहार : दृढ़ संयमी जीवन के दर्शनों से जन-जन पावन : व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण का शंखनाद

पूर्व घोषित 6 दीक्षाओं के साथ ही मुमुक्षु कमलादेवी चंडालिया, मुमुक्षु ट्विंकल जी कामदार व मुमुक्षु रिया जी डागा की भी जैन भागवती दीक्षाएँ 22 जनवरी के लिए जावद हेतु तथा मुमुक्षु शैली जी बाफना की जैन भागवती दीक्षा 7 जून के लिए घोषित, देशभर में जैन-जैनेतर समुदाय में हर्ष की लहर

संथारा साधिका साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. को भावांजलि

तन जावे तो जावे, पर सत्य धर्म नहीं जावे।

-आचार्य श्री रामेश

जैसा सोचेंगे वैसा बनेंगे।

-उपाध्याय प्रवर

इंदिरा नगर, जैन स्थानक, उदय विहार कॉलोनी, महावीर भवन जमुनिया कलां, भाटखेड़ा, चल्दू, मूंडली, मल्हारगढ़, पिपलियामंडी।

मन को प्रसन्नता दे जिनका दर्शन,
मन में चेतना जगाए जिनका दर्शन।
मन में सुख-शांति दे जिनका वचन,
ऐसे महान आध्यात्मिक गुरुवर श्री रामेश को कोटि-कोटि वंदन।।

जिनके दर्शन मात्र से सारे असंभव कार्य संभव हो जाते हैं ऐसे युगनिर्माता, साधना के शिखर, युगपुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.

आदि ठाणा नीमच का ऐतिहासिक साधना महोत्सव चातुर्मास सम्पन्न होने के पश्चात् मालवा के विभिन्न क्षेत्रों को पावन-पवित्र कर रहे हैं। जैन-जैनेतर सभी दर्शन, प्रवचन श्रवण के लिए उमड़ रहे हैं। सामायिक, स्वाध्याय, दया, संवर, प्रतिक्रमण के साथ लोग आध्यात्मिक साधना में सराबोर हो रहे हैं। व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण अभियान गाँव, नगर व स्कूलों में हो रहा है। मुमुक्षु परिजनों द्वारा गुरुचरणों में आज्ञा-पत्र समर्पित हो रहे हैं। अब तक जावद के लिए 9 एवं निम्बाहेड़ा के लिए 2 दीक्षाओं की घोषणा हो चुकी है। संथारा साधिका शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. का जयपुर में पंडितमरण होने पर उनका गुणोत्कीर्तन किया गया।

उभय महापुरुषों के आगामी वर्षावास, होली चातुर्मास, अक्षय तृतीया एवं अन्य प्रसंगों के लिए देशभर से विनतियों का दौर जारी है।

छल, कपट, झूठ से कल्याण असंभव

01 दिसम्बर 2023, इंद्रानगर-नीमच। तेजमल जी सुनील जी नलवाया के निवास पर धर्मसभा का आयोजन हुआ, जिसमें विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''मोक्ष में एकांत सुख है। बाहरी सुख संसार का सुख है। राग-द्वेष अज्ञान को जब दूर करेंगे तब सुख प्रकट होगा। जैसा रूप भीतर है वैसा ही रूप बाहर होना चाहिए अर्थात् अंदर-बाहर एक समान होना चाहिए। भीतर में छल, कपट, झूठ चल रहा है तो कल्याण होने वाला नहीं है। हम जैसा बीज बोयेंगे वैसा फल मिलेगा। कर्म हमने बांधे हैं तो भोगने भी हमें ही पड़ेंगे। त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में महावीर स्वामी के जीव ने दास के कानों में गरम-गरम सीसा डलवाया था। फलस्वरूप महावीर के कानों में कीलें ठोकी गईं। कर्म फल आज नहीं तो कल भोगना ही पड़ेगा। क्रोध के क्षणों में भी हम शांत-प्रशांत अवस्था में रहें। कोई कटु वचन बोले तो उस समय मेरी क्या स्थिति रहती है, इस पर चिंतन अवश्य करें। जैसा भीतर वैसा बाहर नहीं रहेंगे तो चतुर्गति भ्रमण चलता रहेगा।''*

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज टी.वी., मोबाइल के कारण बाल व युवा पीढ़ी दिशाहीन हो रही है। सच्चे गुरु हमें सही मार्ग बताते हैं। उस मार्ग पर चलने से ही हमारा उद्धार होगा।

साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत '*धरती पर फूल खिला है, भगवान पधारे हैं*' प्रस्तुत किया। अनेक भाई-बहिनों ने 12 एकासन, 12 आयंबिल करने का प्रत्याख्यान लिया। दोपहर में जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम हुए। '**राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश**' के अंतर्गत कन्या हाई स्कूल में नैतिक शिक्षा व व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अबू धाबी से आस्था जी जैन ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया।

संथारा साधिका साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. को भावांजलि

फूल के मुरझाने पर भी महक शेष रह जाती है।
व्यक्ति के चले जाने पर भी स्मृतियाँ शेष रह जाती हैं।।

02 दिसम्बर 2023। युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. के उदयपुर में महाप्रयाण पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नीमच सिटी एवं श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच द्वारा गुणानुवाद सभा में भावसुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर मांगलिक भवन में शांत, गंभीर मुद्रा में साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''यह संसार असार है। हमें इस संसार में से सार निकालना है। साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. ने नाना गुरु से दीक्षा ली और 50 वर्ष दीक्षा पर्याय*

का दृढ़ता से पालन किया। दीक्षा लेने के बाद उन्होंने दीक्षा का मूल भाव जान लिया। यह निश्चित है कि संसार में रहेंगे तो हिंसा करनी ही पड़ेगी। कम हो या ज्यादा, लेकिन हमारे शरीर का निर्वाह करने के लिए हिंसा तो करनी ही पड़ेगी। खाना बनाने के लिए असंख्यात् जीवों की हिंसा होती है। साधु-संत अपने निमित्त से बना खाना ग्रहण नहीं करते। गृहस्थ ने अपने लिए जो भोजन बनाया है, वे उसमें से थोड़ा-थोड़ा गोचरी में लेकर आहार करते हैं। अपने पुरुषार्थ की हानि करना श्रावक धर्म नहीं है। हमारे अंदर बदलाव आना चाहिए। ऐसा बदलाव कि हम हिंसा से अहिंसा की ओर बढ़ें। अभी हमारे पैर कीचड़ में फँसे हैं और वहाँ से निकलना नहीं हो रहा है। आरंभ और परिग्रह में रचा-पचा हुआ चिता पर एक बार ही सुलाया जाएगा, लेकिन चिंता तो रोज होती है। चिंता कहाँ से पैदा होती है, पता ही नहीं चलता। वीतरागी को मृत्यु की चिंता नहीं सताती। उनकी मृत्यु नहीं होती, उनका तो निर्वाण होता है। आज हम निर्माण में जी रहे हैं। महापुरुष निर्वाण में जी रहे हैं। साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. ने मंदसौर में वृद्ध साध्वीवर्याओं की बहुत सेवा की है। कभी विचार नहीं किया कि मेरा क्या होगा! उस सेवा का आशीर्वाद प्राप्त होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन में बताया है कि वैयावृत्य (सेवा) करने से तीर्थंकर नामकर्म का बंध होता है। सेवा में अपने व्यक्तित्व की चिंता को हटाना है। जिसकी सेवा करनी है उसमें दत्तचित्त हो जाना है। मान को गलाने की सबसे बड़ी औषधि सेवा है। कुछ दिनों से वे अस्वस्थ चल रहे थे। उनके महाप्रयाण से शासन की अपूरणीय क्षति हुई है। जन्म-मरण के चक्र को रोकने के लिए साधनामय जीवन जीकर हिंसा को रोकना होगा। संसार में रहते हुए सारे रिश्ते-नाते निभाने पड़ते हैं, पर उनसे चिपकना नहीं है।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि **राजा, राणा, छत्रपति, हथियन के असवार, मरना सबको एक दिन अपनी-अपनी बार**। हम प्रतिक्षण अपनी मौत की ओर बढ़ रहे हैं। यहाँ स्थाई कुछ भी नहीं है। हमारा शरीर हमेशा साथ देने वाला नहीं है। हमें इस मनुष्य भव से मोक्ष (शाश्वत सुख) को प्राप्त करना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री चेतनप्रभा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि ये शरीर एक किराए का घर है। इसे एक दिन बदलना ही होगा। साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. ने बरसों तक संयम का पालन करते हुए अपनी आत्मा को हलका किया है। मौत हमारे साथ जन्म-जन्मांतरों से चल रही है। हम उस मौत को भुलाकर बैठे हैं। मौत किसी को नहीं छोड़ती है। साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. दो साल से बीमार अवस्था में थे, पर वे साधना में लीन थे।

साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. ने '*मेरे इस जीवन के साथी हो तुम*' गीत प्रस्तुत किया। वीर माता सुमन जी राठौर, कल्पना जी राठौर एवं ईभ्या जी राठौर ने सुंदर भाव गीतिका प्रस्तुत की। महेश नाहटा ने साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. के दिव्य गुणों का आत्मिक परिचय दिया। सम्पूर्ण सभा ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर साध्वी श्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री वर्ध.स्था. जैन श्रावक संघ के मंत्री ने कहा कि नीमच सिटी में महान क्रियाधारी आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का पधारना हुआ है, जिससे यह धरती पावन हो गई है।

गायत्री विद्यापीठ में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विनय, विवेक, सदाचार, शिष्टाचार, अनुशासन, माता-पिता एवं गुरु सेवा तथा व्यसनमुक्त-संस्कारयुक्त जीवन जीने की अद्भुत प्रेरणा दी। व्यसनमुक्ति के कई शुभ संकल्प हुए। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए।

मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश जी सखलेचा ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर सार्थक चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

मोह छोड़ने से मोक्ष

03 दिसम्बर 2023, जैन स्थानक, नीमच सिटी। अपूर्व सौभाग्य से प्राप्त आज के पावन अवसर रविवारीय समता शाखा में साधना आराधना करने हेतु श्रद्धालु भाई-बहिनों की अच्छी उपस्थिति रही। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ प्रदान किया। समता शाखा के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सभी के प्रति एक समान भाव रखने चाहिए। किसी के प्रति वैरभाव नहीं होना चाहिए। द्वेष, ईर्ष्या पतन की ओर ले जाने वाले हैं। मोह, आसक्ति, लगाव छोड़ने से मोक्ष मिलेगा।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने भजन '*अपने जीवन के जौहरी स्वयं ही बनें, क्या पता फिर ये मौका मिले ना मिले*' प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि विभाव से स्वभाव में आना ही साधना है और यही धर्म है। धर्म के बिना कमाया गया अर्थ, अनर्थ की ओर ले जाने वाला है।

घर में रहते हुए एक गिलास अचित्त पानी पीने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। स्कूलों में व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

चातुर्मास की सार्थकता कषाय, राग-द्वेष कम करने में

04 दिसम्बर 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में '*शुभ मंगल हो, शुभ मंगल हो, जीवन का हर क्षण मंगल हो*' की मंगल ध्वनि से सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय हो गया। जैन स्थानक भवन में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अब तक मैंने क्या किया है और क्या करना शेष है, इस पर आत्मचिंतन करें। अब तक मैंने क्या-क्या अच्छे कार्य किए हैं और क्या गलत कार्य किए हैं इनकी एक सूची अपनी डायरी में बनाएँ। दुर्लभ मानव जीवन को सार्थक किया है या निरर्थक? शुभ मार्ग पर बढ़ने का कार्य अगर होता है तो सद्गति निश्चित है, नहीं तो दुर्गति से कोई बचा नहीं पाएगा। अहोभाव से बोलते रहेंगे तो हमारे भाव भी वैसे ही बन जाएँगे। चातुर्मास में महापुरुषों का सान्निध्य मिला है तो उसका असर जीवन में दिखना चाहिए। जीवन में परिवर्तन आना चाहिए। सरलता, सहजता, विनम्रता, धर्म-ध्यान अगर जीवन में बढ़ता है, कषाय, राग-द्वेष कम होता है तो चातुर्मास की सार्थकता है।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम इधर-उधर की व्यर्थ चर्चा करने में माहिर हैं। हमें धर्म की चर्चा में अपनी रुचि बढ़ानी चाहिए। सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '*गुरु राम पधारे हैं, जगत् के तारणहार पधारे हैं*' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

कई भाई-बहिनों ने एक घंटा मौन रखने का प्रत्याख्यान लिया। भावना जी अरविंद जी वया, नीमच का इस साधना महोत्सव चातुर्मास में दूसरा मासखमण पूर्ण हुआ है। स्कूलों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम सम्पन्न हुए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में जिज्ञासा समाधान, ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक कार्यक्रम का गुरुभक्तों ने लाभ लिया।

05 दिसम्बर 2023। प्रात:कालीन प्रार्थना में पंचपरमेष्ठी को समर्पित वंदन के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में शास्त्रज्ञ परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने अपने दिव्य ज्ञान से जन-जन को लाभान्वित करते हुए दिव्यदेशना में फरमाया कि *''हम धर्म कर रहे हैं, लेकिन धर्म का परिणाम क्या आया? अगर हम जहाँ के तहाँ खड़े*

हैं तो हम धर्म से पूरी तरह लाभान्वित नहीं हो पाएँगे। धर्म करने से हमारा मन तृप्त हुआ या नहीं? मन को संतोष मिला या नहीं? यदि नहीं मिला तो हमने धर्म करने में कमी रखी है। तृष्णा और कषाय में कमी करेंगे तो हमें धर्म का लाभ मिलेगा। अतीत का बोझ लेकर नहीं चलना चाहिए। हमें वर्तमान में जीना चाहिए। यदि हमारी मानसिक स्थिति मजबूत है तो हमें कोई नहीं डिगा सकता। यदि हमारी आँखों में सुंदरता देखने की कला होगी तो पूरी दुनिया हमें सुंदर दिखाई देगी। यदि आत्मा को शांत करना हो तो तृष्णा और कषायों को कम करना होगा। हमें हमारी आत्मशक्ति को जगाना पड़ेगा, तभी तृष्णा और कषाय कम होंगे।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इच्छा और तृष्णा का अंत नहीं है। दुनिया की सारी संपत्ति भी दे दी जाए तो भी इच्छाएँ खत्म नहीं होती। इच्छाएँ पतन की ओर ले जाती हैं।

साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री निरामय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '*गवरा नंदन राम के चरण में, देव भी शीश नमाते हैं*' गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत कर सभी को गुरु समर्पणा के भावों से ओत-प्रोत कर दिया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा ने आगामी वर्ष 2024 के चातुर्मास की भावभरी विनती गुरुचरणों में अर्पित की।

दोपहर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का जैन स्थानक से उदय विहार कॉलोनी में भरत जी जारोली के निवास पर जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ।

अभिमान प्रगति में बाधक

06 दिसम्बर 2023। प्रात: प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का उदयविहार कॉलोनी, नीमच से विहार होकर महावीर भवन, जमुनिया कलां में जय-जयकारों के साथ सादगीपूर्ण माहौल में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ आयोजित धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को धर्म का मर्म बताते हुए बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''वैसे तो अपनी आँखें खुली हुई हैं, पर जो बाहर दिखता है वह सब कुछ नहीं है। अपना मन उसी में उलझता है जो हमें अपनी आँखों से दिखता है। हमें अपने अमूल्य जीवन व समय को खोना नहीं है। जो हमें सहज में प्राप्त होता है उसकी कद्र नहीं होती। वैसे ही हम अपने आपको बहुत बुद्धिमान समझते हैं। यह अभिमान हमारी प्रगति में बाधक है। धन, संपत्ति, मकान आदि को हम अपना समझते हैं, यही सबसे बड़ी भूल है। यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है। कितने जन्मों के बाद यह मनुष्य जन्म मिला है। मनुष्य जन्म प्राप्त कर क्या अच्छा किया जो कि अन्य जन्मों में नहीं किया, यह चिंतन का विषय है। विषय-वासना, संतान पैदा करना तो अन्य कई जन्मों तक किया है। बचपन से लेकर अभी तक कितनी ही तरह के आइटम खाए हैं। क्या इनसे तृप्ति मिली है? एक साल में हम कितने आइटम खाएँगे इसका संकल्प लें। नियम छोटा लें या बड़ा, नियम का दृढ़ता से पालन करने वाला बहुत फल पाता है। यह शरीर में रहने वाली आत्मा को निर्मल बनाने वाला है।''**

सभा में अनेक भाई-बहिनों ने तुरंत खड़े होकर, सौ, डेढ़ सौ, ढ़ाई सौ आइटम से अधिक नहीं खाने का संकल्प लिया। कई गुरुभक्तों ने वर्ष में 12 उपवास, 12 आयंबिल, 12 एकासन करने का प्रत्याख्यान भी लिया।

दोपहर में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने 15 मिनट शास्त्रों का हिंदी अर्थ पढ़ने, शुद्ध गोचरी बहराने, दीक्षा के लिए अन्तराय नहीं देने, दीक्षा लेने वालों को सहयोग देने की अद्भुत प्रेरणा दी। आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ फरमाया। दिल्ली संघ ने आगामी चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती गुरुचरणों में अर्पित की।

इतना मत खाओ कि उठना ही भारी हो जाए

07 दिसम्बर 2023, महावीर भवन, जमुनिया कलां। प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात् उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''शरीर है तो इसे अन्न देना ही पड़ेगा। शरीर के रहते हुए अन्न नहीं छोड़ा जा सकता। खाओ और पुद्गल के स्वाद को भूल जाओ। भगवान महावीर ने छह माह तक आहार नहीं किया था। भगवान ऋषभदेव ने एक वर्ष तक आहार नहीं किया, किंतु आखिर तो शरीर को अन्न देना ही पड़ेगा। शरीर है तो इसका निर्वाह करना ही पड़ेगा। इतना मत खाओ कि उठना भारी पड़ जाए। भगवान कहते हैं कि स्वाद पर विजय प्राप्त कर लो। खाना सबको पड़ता है। साधु को भी छह कारण से आहार करना पड़ता है और छह कारण से आहार छोड़ना पड़ता है। छह कारण में एक कारण प्राणभूत जीव सत्व की रक्षा बताई है। जब तक भूख नहीं होती है तब तक मत खाओ, लेकिन भूख लग रही है तो खा लो। आसक्ति से मत खाओ, स्वाद लेकर मत खाओ। भक्ति, अपने मन-मंदिर में किसी दूसरों को नहीं लाएँ तो कोई विघ्न नहीं पड़ने वाला है। अपने आत्मभाव में रहो। दूसरों के प्रति कोई बुरा विचार नहीं करना। सबके साथ मैत्रीभाव रखना। किसी के साथ वैरभाव नहीं रखना।''*

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कर्मों के कर्ता एवं भोक्ता हम स्वयं हैं। मन, वचन, काया से कोई भी अशुभ कर्म हम न बांधें। कर्म बांधना बहुत सरल है, पर उसे भोगना बहुत कठिन है। एक सामूहिक गीतिका '*श्रम गुरु के चरणों में वंदन है, अभिनंदन है, इनके पावन दर्शन में अरिहंतों के दर्शन हैं*' का गायन किया गया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जमुनिया कलां की ओर से श्रावक जी ने कहा कि उभय महापुरुषों के पधारने से हम धन्य हो गए हैं। आपश्री अधिकाधिक यहाँ विराजने की कृपा करें। महावीर भवन में प्रतिदिन एक बार आने का संकल्प अनेक जनों ने लिया। मंदसौर संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत की।

पूज्य तपस्वीराज श्री कान मुनि जी म.सा. की नेश्राय में 21 फरवरी 2024 को जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने वाली मुमुक्षु बहिन कोमल जी गुगले सुपुत्री श्री कोमलचंद जी गुगले, बोलठाण (नासिक) ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं के पावन दर्शन कर सेवा का लाभ लिया।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जमुनिया कलां एवं श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ द्वारा एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिन कोमल जी गुगले का आत्मीय बहुमान किया गया। मुमुक्षु बहिन ने संयम जीवन को श्रेष्ठ जीवन निरुपित करते हुए दीक्षा में पधारने हेतु निवेदन किया। दोपहर में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने साधुचर्या की विशेष जानकारी दी।

कोई भी हमारा बिगाड़ करने में समर्थ नहीं

08 दिसम्बर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने करवाई। उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''इस दुनिया में यदि कोई सुखी है तो एकांत रूप से वीतरागी सुखी है। उनको कोई दु:ख नहीं है। शरीर की पीड़ा उनको भी होती है, लेकिन वे परेशान नहीं होते हैं। वे जान रहे हैं कि जैसा मैंने बीज बोया है वैसा ही फल मिलेगा। मैंने टंकी में जैसा पानी भरा है वैसा ही पानी आ रहा है। मैं अपने बिगाड़ के लिए तैयार होता हूँ तो ही मेरा बिगाड़ होता है, अन्यथा कोई हमारा बिगाड़ करने में समर्थ नहीं है। यदि हमने अपने पर नियंत्रण कर लिया तो कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। हम किसी के चलाए अनुसार चलते हैं या अपने मन से? अपने विचारों से चलना बहुत मुश्किल है। बहुत से लोग दूसरों के चलाए चलते हैं। जो दूसरों के*

चलाए चलते हैं वे दुःखी होते हैं। अपने मन से जो चलते हैं वो दुःखी नहीं होते हैं। यदि आप दूसरों के मन से चलने वाले हैं तो आज नहीं तो कल दुःखी होंगे ही। तन जावे तो जावे, पर सत्य धर्म नहीं जावे। राजा हरिश्चंद्र ने प्रतिज्ञा कर ली कि चाहे कितने भी संकट आ जाएँ, फिर भी अंत तक सत्य धर्म नहीं छोड़ूँगा। उनको हर संकट सहन करने की ताकत मिली। सच्चाई, ईमानदारी पर टिके रहोगे तो आपको हर कठिनाई सहने की शक्ति मिलेगी।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा को पतन की राह पर न ले जाएँ। समभाव में जीने का अभ्यास करें। '*गुरुवर आए सभी के मन भाए*' सामूहिक स्वर लहरी वातावरण में गूँजने लगी। 15 मिनट स्वाध्याय और पक्खी प्रतिक्रमण करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। विद्यालयों में व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम हुए। दोपहर में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने साधुचर्या, गोचरी आदि की जानकारी प्रदान की।

मुमुक्षु बहिन कमलादेवी चंडालिया की जैन भागवती दीक्षा 22 जनवरी 2024 को जावद तथा मुमुक्षु बहिन शैली जी बाफना की जैन भागवती दीक्षा 9 जून 2024 के लिए घोषित

09 दिसम्बर 2023, भाटखेड़ा। प्रातः मंगलमय प्रार्थना के बाद आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का दशरथसिंह जी राठौड़, भाटखेड़ा के निवास पर जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। दिनभर दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, धर्मपाल प्रचार प्रसार समिति के पूर्व संयोजक आदि ने गुरु दर्शन सेवा का लाभ लिया।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की निर्मल संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक भव्यात्माएँ श्रीचरणों में समर्पित हो रही हैं। इसी कड़ी में 21 वर्षीय **मुमुक्षु शैली जी बाफना** सुपुत्री दिनेश जी रोमा जी बाफना, सुपौत्री अमरचंद जी प्रेमलता जी बाफना, दुर्ग/अर्जुन्दा (छ.ग.) की दीक्षा हेतु गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित हुआ। अनुज्ञा-पत्र का पठन वीरदादा अमरचंद जी बाफना ने किया। वीर परिवार के उपस्थित सदस्यों ने अनुज्ञा-पत्र एवं मुमुक्षु शैली जी बाफना ने प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। वीरमाता रोमा जी बाफना एवं बहिनों ने '*आज्ञापत्र ले गुरुचरणों में बाफना परिवार चला*' भाव गीतिका प्रस्तुत की। सभा जय-जयकारों एवं जयवंता-जयवंता गीत से गुँजायमान हो गई।

गुरुवर ने अपार कृपा कर साधुमर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित दीक्षा **09 जून 2024** के लिए स्वीकृति प्रदान की। '**रामगुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है**', '**रामगुरु की जय-जयकार**' आदि अनेक उद्घोषों से सभा गूँजने लगी। जमुनिया कलां संघ, नीमच साधुमार्गी जैन श्रावक संघ द्वारा एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु शैली जी बाफना एवं परिजनों का आत्मीय स्वागत-अभिनंदन किया गया।

मुमुक्षु कमलादेवी समरथमल जी चंडालिया, कपासन की दीक्षा हेतु परिजनों ने अनुज्ञा-पत्र एवं मुमुक्षु कमलादेवी ने प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। आचार्य भगवन् ने **22 जनवरी 2024** को दीक्षा के लिए आगारों सहित स्वीकृति प्रदान की। घोषणा के साथ ही सम्पूर्ण सभा जयघोषों से गूँजने लगी। मुमुक्षु कमलादेवी चंडालिया एवं परिजनों का आत्मीय बहुमान श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच एवं जमुनिया कलां संघ द्वारा एक अलग कार्यक्रम में किया गया।

महावीर भवन, जमुनिया कलां में आयोजित धर्मसभा में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कंपीटिशन द्वेष है और पहला कर्त्तव्य है कि हम अपने आपको द्वेषमुक्त करें। मन से सब लोगों को सुखी करने का लक्ष्य रखें। ये ध्यान रखना चाहिए कि सबका भला हो, यही लक्ष्य होना चाहिए। जो ऐसा लक्ष्य रखता है उसको ऐसा पुण्य मिलता है कि वो जो-जो चाहता है उसे प्राप्त कर लेता है। अगर आप किसी वस्तु से ईर्ष्या करें, चाहे वह रूप हो, धन हो या अन्य

कुछ भी, वह आप प्राप्त नहीं कर पाओगे। सभी के प्रति मैत्रीभाव भाएँ। मेरा स्वास्थ्य ठीक रहे, उसमें मैं धर्म-ध्यान कर सकूँ। कोई व्यक्ति मेरे यहाँ से खाली न जाए। भगवान मुझे हमेशा सद्बुद्धि प्रदान करे। साधु-संतों का योग मिलता रहे। ऐसे उच्च भावों को जीवन में स्थान दें। 'मैं' की जगह 'हम' की भावना भाएँ तो कुछ ही दिनों में इसका चमत्कार दिखने लगेगा।

विभिन्न त्याग प्रत्याख्यान हुए। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर का भाटखेड़ा से विहार कर आर.बी.एस. कॉलेज में पधारना हुआ।

जिस गाँव से एक भी दीक्षा नहीं, वह गाँव कुँवारा

मुमुक्षु बहिन ट्विंकल जी कामदार की जैन भागवती दीक्षा 22 जनवरी 2024 को जावद हेतु स्वीकृत

10 दिसम्बर 2023, आर.बी.एस. कॉलेज, हरकीयाखाल। विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् आदि ठाणा 4 का भाटखेड़ा से जय-जयकारों के साथ आर.बी.एस. कॉलेज में मंगल पर्दापण हुआ। 29 वर्षीय मुमुक्षु बहिन ट्विंकल जी कामदार सुपुत्री श्वेता जी गिरिश जी कामदार, आदिलाबाद की दीक्षा हेतु अनुज्ञा-पत्र परिजनों ने गुरुचरणों में सहर्ष समर्पित किया। मुमुक्षु बहिन ट्विंकल जी ने अपना प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित करते हुए भाव गीतिका प्रस्तुत की-

गुरुदेव आपके चरणों में, शीश झुकाकर नमती हूँ।
करती हूँ, मैं करती हूँ, तुम्हें बार-बार वंदना करती हूँ।।

बड़ी माता जी नीता जी कामदार ने अपने उद्गार में कहा कि आज भले ही इसके पिता नहीं हैं, पर उनकी बहुत इच्छा थी कि यह संयम में आगे बढ़े। इसके पिता जी ने धर्मपिता रूप गुरुदेव को सौंपने का निर्णय बना लिया था, जिसे हम आज श्रीचरणों में अर्पण कर पूर्ण कर रहे हैं।

परम पूज्य तरुणतपस्वी आचार्य भगवन् ने उपस्थित जनसमुदाय को भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना में आगे बढ़ने के भाव महान पुण्योदय से आते हैं। जिस क्षेत्र से, परिवार से, गाँव से, नगर से दीक्षा होती है, वो परिवार, गाँव धन्य-धन्य हो जाता है। जिस गाँव से एक भी दीक्षा नहीं हुई वह गाँव कुँवारा रह जाता है। जो दीक्षा लेता है वह सच्चे मायने में वीर है। दीक्षा से छह काय के जीवों को अभयदान मिलता है। जिसकी ऐसी शुभ भावना होती है वही दीक्षा को पाता है। मानव जीवन का सार संयम है।* ***दीक्षा आप लीजिए, औरों को भी दिलाइए। जो भी दीक्षा लेवे उसका साथ दीजिए।***''दीक्षा में अन्तराय नहीं देने का संकल्प सभी भाई-बहिनों ने लिया।

मुमुक्षु बहिन ट्विंकल जी एवं परिजनों का पिपलियामंडी एवं नीमच संघ द्वारा आत्मीय बहुमान किया गया। दिनभर दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

घर के प्रत्येक सदस्य को 24 तीर्थंकरों के नाम कंठस्थ हों

11 दिसम्बर 2023। प्रात: आर.बी.एस. कॉलेज से विहार कर युगनिर्माता आचार्य भगवन् आदि ठाणा 4 का सरपंच ठाकुर तख़तसिंह जी शक्तावत के निवास चल्दू, जिला नीमच में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। ग्रामीणों में खुशी की लहर व्याप्त हो गई।

दोपहर में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने नवकारसी, पोरसी, डेढ़ पोरसी, नींवी, एकासना, अभिग्रह की व्याख्या फरमाते हुए तप-त्याग, नियम, पच्चक्खान से जुड़ने का आह्वान किया। घर के प्रत्येक सदस्य को 24 तीर्थंकरों के नाम कंठस्थ करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर ग्रामवासियों के अतिरिक्त आस-पास के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा एवं मंगलपाठ श्रवण का लाभ लिया। व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम भी हुए।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 ने मल्हारगढ़, पिपलियामंडी, बोतलगंज से मंदसौर तक का 27 किमी. का उग्र विहार कर वहाँ विराजित पर्यायज्येष्ठा शासन दीपिका साध्वी श्री कस्तूरकँवर जी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी म.सा. आदि महासतीवर्याओं को पावन दर्शन देकर कृतार्थ किया।

आगम सूत्रों से मिलती है अभिप्रेरणा

12 दिसम्बर 2023। सामूहिक मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् परम प्रतापी आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का हर्षित जी भण्डारी एवं नरेंद्र जी खिंदावत के ई-अश्व ऑटोमेटिव, मूंडली में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि स्वयं पर किया गया शोध हमें आगे बढ़ाने वाला है। सबसे पहले हमें अपने जीवन में आगम को पढ़ना चाहिए। वह एक सूत्र ऐसा है जो हमारे जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक है। हमारे आगम सूत्रों में इतनी ताकत है कि एक आगम सूत्र से ही जीवन को अभिप्रेरित करने वाले अनेक प्रेरणादायी सूत्र मिल जाएंगे। हमने गुणों को खोया है। करूणा, दया, सहानुभूति की भावना नहीं रही है। सब खत्म हो गया है। सारी सुविधाएँ बढ़ने के बाद भी हम कितना कार्य कर रहे हैं। सारे काम जल्दबाजी में करने की आदत के कारण हमारे कितने ही गुण खत्म हो गए हैं। हमें बोला जाएगा कि आप पुरानी परंपराओं का पालन करें तो हम नहीं कर पाएंगे और अगर शरीर में कोई प्रॉब्लम आ जाए तो हम योगा, एक्सरसाइज करने के लिए तैयार हो जाएंगे। डॉक्टर बोलता है कि थोड़ा नंगे पैर चला करो तो हम तैयार हो जाएंगे और यदि धर्म का पालन करने को बोलेंगे तो नहीं करेंगे।

नारायणगढ़, बुढ़ा, चपलाना, मंदसौर, पिपलियामंडी आदि क्षेत्रों की विनतियाँ श्रीचरणों में प्रस्तुत की गई। व्यसनमुक्ति के संकल्प हुए। जिनकी जितनी उम्र है उतने नवकार गिनने का संकल्प सभा में उपस्थित सभी महानुभावों ने लिया। पिपलियामंडी संघ अध्यक्ष ने कहा कि नीमच संघ ने इतिहास बनाया है, अब हमें भी तप, त्याग, नियम लेकर इतिहास बनाना है।

दीक्षा आप लीजिए, औरों को भी दिलाइए

13 दिसम्बर 2023, जैन स्थानक भवन, मल्हारगढ़। प्रात:कालीन प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में उपस्थित गुरुभक्तों को आत्मतृप्त करते हुए फरमाया कि *''मनुष्य जन्म अत्यंत दुर्लभ है। हमारा यह जन्म निर्णायक होना चाहिए। अभी तक हमारा धन-परिवार, पद-प्रतिष्ठा से लगाव रहा है, जबकि वास्तविकता में हमें आत्मा की दिशा में आगे बढ़ना है। आत्मलक्ष्य से हम भटक गए तो जन्म-मरण का चक्र चलता रहेगा। तृष्णा का कहीं अंत नहीं है। मनुष्य जन्म में जो धर्माराधना कर सकते हैं वो देवता भी नहीं कर पाते हैं। संपत्ति आज है, कल पता नहीं होगी कि नहीं। अपनी संतानों को शादी के पहले यह शिक्षा देनी चाहिए कि एक मार्ग संसार का मार्ग है और एक दीक्षा का, संयम का मार्ग है। धर्म मार्ग में बढ़ने के लिए संतानों को प्रेरणा देनी चाहिए। दीक्षा स्वयं लीजिए, औरों को भी दिलाइए। जो भी दीक्षा लेना चाहते हैं उनका साथ दीजिए। जम्बूकुमार शादी की पहली रात में ही अपनी पत्नियों को बोध देते हुए वैराग्य, वीतराग मार्ग की ओर आगे बढ़ गए। 527 लोगों के साथ उन्होंने दीक्षा ले ली। धर्मदलाली करते हुए तीर्थंकर नामकर्म का बंध होता है। हमें सदैव भलाई का कार्य करना है। किसी के प्रति बुरी सोच नहीं रखनी है।''*

दीक्षा में अन्तराय नहीं देने का संकल्प कई लोगों ने लिया। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने सामूहिक नवकार मंत्र का जाप करवाया।

मुनि नहीं तो श्रमणोपासक अवश्य बनें

13 दिसम्बर 2023, समता भवन, मंदसौर। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने समता भवन, मंदसौर में धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि **''हम मुनि जीवन स्वीकार नहीं कर सकते तो कम से कम श्रमणोपासक बनकर तो अपने कर्मों का अंत कर सकते हैं। श्रावक यह मनन करें और अपने मन में चिंतन अवश्य करें। यदि भावनाएँ अपने हृदय में जागे तो बड़ा काम हो सकता है। हमारी सोच में बहुत बड़ी ताकत है। हम जैसा सोचेंगे वैसा बन सकते हैं। तीन बातें हमें अपने भीतर बसानी चाहिए– (1) श्रावक तुम अपने परिग्रह को कब कम करोगे? (2) तुमने अपनी सुविधाएँ, परिग्रह घटाने की कभी सोची नहीं है। जरूरत से ज्यादा परिग्रह हमें सुख व शांति देने वाला नहीं है। (3) प्रतियोगिता की दौड़ से बाहर निकलना पड़ेगा। हमें दूसरों से कंपीटिशन नहीं करना चाहिए।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि पच्चक्खान से आश्रवों का निरोध होता है। पच्चक्खान से जीव सर्व द्रव्यों से मुक्त होता है।

समता महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने महापुरुषों के आगमन को अनंत पुण्यवानी का उदय बताया। कई त्याग–प्रत्याख्यान हुए।

साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. को भावांजलि
शरीर में व्याधि, पर चित्त में समाधि

14 दिसम्बर 2023। सिरीवाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य भगवन् आदि ठाणा का सुठोद में राजेंद्र जी सोलंकी के निवास पर जय–जयकारों के साथ मंगल पर्दापण हुआ। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। दोपहर में पुन: विहार कर बरखेड़ापंथ में अर्जुन जी पाटीदार के निवास पर मंगलमय पदार्पण हुआ। यहाँ आयोजित गुणानुवाद सभा में संथारा साधिका साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. के पंडितमरण पर भावांजलि अर्पित की गई।

परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने शांत एवं गंभीर मुद्रा में *'चेत चतुर नर कालचक्र से, कोई नहीं बच पाएगा'* गीत के गान के साथ फरमाया कि *''शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. का जयपुर में संथारापूर्वक देवलोकगमन होने के समाचार कल प्राप्त हुए। श्री जयश्री जी म.सा. का जन्म सेठिया परिवार में हुआ। जहाँ आपको बचपन से ही धर्म के संस्कार मिले। आपकी दीक्षा की भावना बनी, किंतु संकोचवश परिवार वालों के समक्ष भाव प्रकट नहीं कर पाए। आपका विवाह धर्मीचंद जी धोका के साथ हुआ और प्रथम रात्रि में ही आपने अपने भाव प्रकट कर दिए कि मेरी दीक्षा की भावना थी, पर घर वालों को बोल नहीं पाई। श्री धर्मीचंद जी भी बोले कि मेरी भी भावना दीक्षा की थी पर घर वालों ने अनुमति नहीं दी। घर वालों का अति आग्रह था इसलिए शादी हो गई।*

दोनों शुद्ध भावों के साथ गुरुवर आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की सेवा में राजनांदगाँव पहुँचे और आजीवन शीलव्रत की प्रतिज्ञा कर ली, तत्पश्चात् रायपुर में गुरुदेव के मुखारविंद से आप द्वय की दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षा पश्चात् जयश्री जी धोका साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. एवं श्री धर्मीचंद जी धोका श्री धर्मेश मुनि जी म.सा. बन गए। श्री जयश्री जी म.सा. कुछ ही वर्षों में कई साध्वीरत्नाओं की आधारभूत बन गई। मिलनसार स्वभाव होने से हर कोई आपसे प्रभावित हो जाता था। अंतिम समय में भी खूब धैर्य रखा। जब डॉक्टरों ने बताया कि लम्बा समय निकलना मुश्किल है तो आपश्री जी ने फरमाया कि इसमें घबराने की क्या बात है? यह तो एक दिन होना ही है।

आपने स्वत: ही संथारा ग्रहण कर लिया। बाद में साध्वी श्री चंद्रप्रभा श्री जी म.सा. ने विधि सहित संथारा ग्रहण करवाया। संथारा अवस्था में अपना तीसरा मनोरथ सिद्ध कर यह दिव्य आत्मा यहाँ से प्रस्थान कर गई। उनका देहावसान शासन के लिए अपूरणीय क्षति है। किंतु संतोष है कि उन्होंने तीनों मनोरथ सिद्ध कर लिए। हम सभी दिव्य आत्मा से प्रेरणा लेकर संसार की असारता को ध्यान में लेवें।''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने भावोद्गार में फरमाया कि अंतिम समय पूरे जीवन की परीक्षा का समय है। जिसने शरीर व आत्मा का भेद-विज्ञान जान लिया, उसे समाधि रहती है। जिसका शरीर से ममत्व रहता है, वह आर्त्तध्यान में चला जाता है। महासती श्री जयश्री जी म.सा. शरीर के ममत्व से ऊपर उठ चुके थे। अंतिम समय में भी संथारा-संलेखना कर पूर्ण सजगता के साथ महाप्रयाण किया।

उपस्थित सभी लोगों ने 4-4 लोगस्स का ध्यान कर संथारा साधिका दिव्यात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मंदसौर विराजित बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने धर्मसभा में फरमाया कि ''**गुरु सत्य का बोध देते हैं। स्वयं को आत्मा की ओर मोड़ो। सुबह उठकर सबसे पहले यह चिंतन करो कि यह मेरा आज अंतिम दिन है। हमें अपनी आत्मा की आवाज की चिंता करनी चाहिए किंतु हम घर, परिवार, दुकान, धन की चिंता करते हैं।**''

संतोषी सदा सुखी

पिपलियामंडी की माटी हो गई चंदन।
पधारे हैं माँ गवरा के नंदन।।

15 दिसम्बर 2023, समता भवन, पिपलियामंडी (अमर नगरी)। युगनिर्माता आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. आदि ठाणा-4 का बरखेड़ापंथ से अमर नगरी पिपलियामंडी में '**संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं**', '**जय-जयकार, जय-जयकार, रामगुरु की जय-जयकार**' आदि जयघोषों के साथ ऐतिहासिक साधुमार्गी जैन भवन में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। चारों ओर खुशियों का माहौल था। नगरवासियों के अलावा आस-पास के संघों के श्रद्धालु अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

यहाँ पदार्पण पश्चात् विहार यात्रा धर्मसभा सभा में बदल गई। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''अजितनाथ भगवान की स्तुति हमें प्रेरणा दे रही है कि तुम गतिशील बनो। अपने कदमों को गतिशील बनाओ। एक शरीर की स्थिरता होती है, दूसरी स्थिरता मन की होती है। शरीर से रुक जाना दु:ख का कारण हो सकता है, किंतु मन से अस्थिर होना बहुत बड़ा दु:ख का कारण है। मनोबल मजबूत होने से ही सफलता प्राप्त होती है। मन की चंचलता हमें सफलता नहीं दिलाएगी। इस संसार में कुछ भी प्राप्त करने लायक नहीं है। जब तक प्राप्त करने के पीछे दौड़ते रहेंगे, तब तक मन शांत नहीं बन पाएगा। यहाँ प्राप्त करने लायक कुछ है तो वह है शांति और संतोष। शांति व संतोष प्राप्त हो गया तो हम सदा सुखी हो जाएंगे। संतोष आएगा तो मन शांत एवं स्थिर हो जाएगा। त्याग करने से मन शांत व संतुष्ट होता है, मन में संतोष आता है। जिसको चाह बनी रहती है उसको भगवान की शरण नहीं मिलेगी।''*

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जहाँ चंचलता है वहाँ दु:ख है। जहाँ स्थिरता है वहाँ सुख है। आचार्य भगवन् पधारे हैं, अधिक से अधिक सामायिक, संवर, प्रतिक्रमण, दया, पचरंगी आदि धर्म-तपाराधना करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '*धन्य है जिनवाणी गुरुवर, धन्य है जिनवाणी*' गीतिका प्रस्तुत की। संघ अध्यक्ष जी ने आचार्य भगवन् के आगमन पर हर्ष व्यक्त करते हुए शेखेकाल

विराजने की भावभरी विनती प्रस्तुत की। कई भाई-बहिनों ने वर्ष में 12 एकासना, 12 आयंबिल, 12 उपवास करने का नियम लिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का क्रमश: **नागदा** एवं **सीतामऊ** चातुर्मास सम्पन्न कर गुरुचरणों में पधारना हुआ। मध्य प्रदेश शासन के पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं नवनिर्वाचित विधायक ओमप्रकाश जी सखलेचा के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी आदि कई विशिष्टजनों ने धर्म विज्ञान जैसे अनेक विषयों पर चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। पूरा मालवा व देश धर्म एवं गुरु राम के रंग में रंगा हुआ है।

मंदसौर विराजित उपाध्याय प्रवर ने गुरु समर्पणा एवं श्रद्धा को सर्वोत्तम बताते हुए फरमाया कि **''गुरु पूरे संसार में एक ऐसे व्यक्ति हैं जो हमें सुखी बनाते हैं। गुरु के सान्निध्य में शांति व सुकून मिलता है। गुरु का छोटा-सा ज्ञान हमारा जीवन बदल देता है।''**

तपस्या सूची

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	बापूलाल जी कोठारी, चंचल जी पुखराज जी श्रीश्रीमाल, विजयसिंह जी चौधरी, रोशनलाल जी मानकँवर जी चौधरी, शांतिलाल जी मनोरमा जी दक, चंद्रप्रकाश जी चंदादेवी चंडालिया-कपासन, कोमल जी पारसमल जी मांडोत, विमल जी मेहता-नारायणगढ़, अशोक जी दुग्गड़, पुखराज जी रेखा जी छिंगावत
उपवास	30- भावना जी अरविंद जी वया, नीमच (31 के प्रत्याख्यान)
नीवी	51- प्रेमलता जी पटवा

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'नमो आयरियाणं (आचार्य पद की महत्ता, आवश्यकता, आचार्य की विशेषताएँ एवं आचार्य के 36 गुण इत्यादि)'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

- श्रमणोपासक टीम

विविध समाचार

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

मंगलवाड़। शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में ऐतिहासिक वर्षावास में तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान कड़ी अनवरत रही। 10 से 12 अक्टूबर को आयोजित तीन दिवसीय '**जीवन का लक्ष्य**' विषयक शिविर में साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. ने मार्गदर्शन प्रदान किया। जैनेतर अनोपबाई नाथ के मासखमण तप की अनुमोदना एवं संघ स्थापना दिवस पर सामूहिक एकासन के आयोजन में 300 एकासन सम्पन्न हुए। एक दिवसीय '**संस्कारों के दर्पण में**' मेवाड़ अंचल क्षेत्रीय महिला शिविर में 34 क्षेत्रों से 534 महिलाओं ने सहभागिता निभाई। साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. ने विभिन्न विषयों पर प्रभावशाली उद्बोधन दिया। व्यसनमुक्ति रैली भी निकाली गई।

आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश आचार्य पदारोहण दिवस पर नवकार महामंत्र जाप, नानेश-रामेश चालीसा के जाप सहित गुणगान किया गया। इस अवसर पर 121 आयंबिल हुए। वीर निर्वाण दिवस पर 61 तेला तप हुए। दीपावली अवकाश पर बच्चों के लिए 8 से 12 नवंबर तक संस्कार शिविर लगाया गया, जिसमें 92 बच्चों ने भाग लिया। चारित्रात्माओं द्वारा आह्वान पर दीपावली से ज्ञान पंचमी के दौरान 9 अठाई व बड़ी तपस्याएँ हुई। 23-24 नवंबर को '**स्मार्ट के साथ आराधक बनें**' शिविर में 40 पुरुषों ने तथा 23 से 25 नवंबर को '**ले लो जिनशासन में एडमिशन**' शिविर में 107 महिलाओं ने भाग लिया।

चातुर्मास काल में 11 शिविरों के आयोजन के साथ 9 मासखमण, 22 की एक, 17 की एक, 15 की छह, 11 की सात, 10 की एक, 9 की पंद्रह, 300 से अधिक तेले, 2 धर्मचक्र, 1100 से अधिक संवर आदि की तपस्याएँ सम्पन्न हुई। एकासन, आयंबिल, उपवास और 9 घंटे मौन की लड़ी निर्बाध रूप से चली। 41 जनों ने जैन सिद्धांत बत्तीसी कंठस्थ की। **-मनीष कुमार पोखरना**

भदेसर। शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का आसावरा एवं भदेसर का संयुक्त चातुर्मास धर्म-ध्यान, त्याग-तप की अद्भुत प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। भदेसर में एकासन, आयंबिल, तेले एवं अठाई की लड़ी गतिमान रही। प्रतिदिन एक घंटे नवकार महामंत्र जाप, रात्रि संवर के मासखमण पूर्ण हुए साथ ही लगभग 35 तेले, 11 अठाइयाँ, ग्यारह की 1, सतरह की 1 व चार पंचोले हुए। बहिनों ने दो माह जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक व जीवधड़ा का अध्ययन किया। उपवास एवं एकासन के वर्षीतप गतिमान हैं। छह वर्षीय बालिका भव्या नाहर ने जैन सिद्धांत बत्तीसी पूर्ण की। **-अशोक मोदी**

कानोड़। शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (देशनोक वाले) आदि ठाणा-7 का

चातुर्मास अपूर्व हर्षोल्लास व धार्मिक जनजागृति के साथ सम्पन्न हुआ। आपश्री जी द्वारा फरमाए गए आगमोक्त जीवनोपयोगी प्रवचनों ने जनमानस के हृदयों पर गहरी छाप छोड़ी है।

साध्वी श्री मननप्रज्ञा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खुशाल श्री जी म.सा., साध्वी श्री पूर्णा श्री जी म.सा. ने मधुर प्रवचन धारा प्रवाहित की। प्रार्थना पश्चात् प्रतिदिन एक घंटे धार्मिक कक्षा का आयोजन होता, जिसमें युवाओं को ज्ञानार्जन करवाया गया। चातुर्मास में एकासन, आयंबिल, उपवास व तेले की लड़ी निर्बाध चली। राजेंद्र जी मुरड़िया के मासखमण तप के अलावा ग्यारह की 2, नौ की 7, 90 तेला तप आराधना, 45 षट्रस तप, 680 संवर, 113 पौषध, 55 आयंबिल सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यान चातुर्मास के दौरान हुए। महिलाओं व युवाओं के लिए तीन शिविर एवं नवकार महामंत्र जाप आयोजित किए गए।

चातुर्मास की पूर्णता पर संघ मंत्री, युवा संघ अध्यक्ष, महिला मंडल मंत्री, बहूमंडल अध्यक्ष सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने विचार व्यक्त करते हुए क्षमायाचना के भाव रखे। शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का डूंगला की दिशा में विहार हुआ है। **-तखतमल लसोड़**

उदयपुर। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की कृपा से उदयपुर में चार स्थानों एवं नाई सहित पाँच चातुर्मास अपूर्व धर्माराधना एवं त्याग-तपस्याओं के साथ सम्पन्न हुए। चातुर्मास में महिला शिविर व प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा मासखमण, 15 उपवास, अठाई, पाँच व तेले के साथ ही शासन दीपिका साध्वी श्री करुणा श्री जी म.सा. के मासखमण की तपस्या सम्पन्न हुई।

-पी.के. डागा

डूंगला। शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 की प्रेरणा से मनोज जी मेहता के 11 की तपस्या 11 दिसम्बर को पूर्ण हुई। तपस्या के अनुमोदनार्थ परिवारजनों ने 21 एवं 11 उपवास व तेला तप करने के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। संघ मंत्री ने आस-पास के क्षेत्रों से पधारे गुरुभक्तों का आभार ज्ञापित किया। **-अशोक मेहता**

भीलवाड़ा। शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. के संथारा सहित पंडितमरण पर 14 दिसम्बर को शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवर जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में प्राज्ञ भवन में एवं 15 दिसम्बर को शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में शंकर समता भवन में गुणानुवाद सभाओं का आयोजन किया गया।

साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा. ने साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. का जीवन परिचय देते हुए उनके संयम मार्ग पर बढ़ने का दिग्दर्शन कराया। साध्वी श्री सुनीता श्री जी म. सा. ने फरमाया कि मृत्यु को महोत्सव एक दिन में नहीं बनाया जाता अपितु बहुत समय पहले ही तैयारी कर ली जाती है।

साध्वी श्री चितरंजना श्री जी म. सा. ने फरमाया कि आपने अपने सांसारिक पति शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनि जी म.सा. के साथ विवाह के ठीक पश्चात् शीलव्रत के प्रत्याख्यान लेकर अनुपम जोड़ी बनाई।

शासन दीपिका साध्वी श्री अनाकार श्री जी म.सा. आदि ठाणा ने प्राज्ञ भवन से शंकर समता भवन पधारकर भावाभिव्यक्ति में गुणानुवाद किया। स्थानीय संघ अध्यक्ष, मंत्री सहित अनेक वक्ताओं ने श्रद्धाभाव व्यक्त किए। **-दीपक बेताला**

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

देशनोक। शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के वर्षावास में

त्याग-तप की लड़ियों के साथ तपस्याओं के कीर्तिमान स्थापित हुए। आपश्री जी का 28 नवम्बर को सुरजासर की दिशा में मंगल विहार हुआ। विहार सेवा में लगभग 350 गुरुभक्तों ने उपस्थित होकर पुनरागमन हेतु विदाई दी।

विहार से पूर्व प्रवचन सभा में शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. ने फरमाया कि एकमात्र धर्म ही हमें अधोगति में जाने से बचाकर उत्थान की ओर ले जा सकता है। धर्म करने का उद्देश्य कर्मनिर्जरा का होना चाहिए। चातुर्मास काल में जो उत्साह दिखाया वह चातुर्मास के पश्चात् भी जारी रहना चाहिए।

साध्वीवर्याओं ने क्षमायाचना का प्रसंग उपस्थित करते हुए सभी से क्षमायाचना की। चातुर्मास में लगभग 12 शिविर, जैन सिद्धांत बत्तीसी, कर्मप्रज्ञप्ति की कक्षाएँ सिद्धि तप, चंद्रकला तप, षट्रस तप सहित अनेक तपस्याएँ व त्याग-प्रत्याख्यान हुए। संघ की तीनों इकाइयों सहित सभी ने क्षमायाचना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। भगवानदास जी साध, नवीन जी कातेला, करण जी भूरा, सोनू जी लुणिया ने अठाई तप किया। शिविर में भाग लेने वाले एवं पटाखे फोड़ने का त्याग ग्रहण करने वाले बच्चों को सम्मानित किया गया।

-आशीष बुच्चा

नोखामंडी। शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का नोखागाँव चातुर्मास सम्पन्न करने के पश्चात् जैन जवाहर भवन में जय-जयकारों के साथ पदार्पण हुआ। साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. के देवलोकगमन पर आपश्री जी के पावन सान्निध्य में 2 दिसम्बर को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। श्री विनय मुनि जी म.सा. ने गुणानुवाद करते हुए फरमाया कि साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. सौभाग्यशाली थी, जो उनको आचार्य श्री नानालाल जी म.सा., आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। हमें उनके गुणों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने जन्म-मरण की व्याख्या देते हुए महासती जी के जीवन पर प्रकाश डाला। शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. के तन में व्याधि होते हुए भी वे स्वाध्याय, साधना, नित-नियम में लगे रहते थे। संघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री जी सहित अनेक वक्ताओं ने भी गुणगान किया। अंत में सभी ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

-किशनलाल कांकरिया

बीकानेर। आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव' के अंतर्गत श्री साधुमार्गी जैन संघ की ओर से श्री सुगनीदेवी जेसराज बैद अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर के पैथोलॉजी विभाग में एक CBC मशीन भेंट की गई। अस्पताल परिसर में 14 दिसम्बर को आयोजित कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय महामंत्री, स्थानीय संघ, महिला समिति, बहू मंडल, समता युवा संघ अध्यक्ष, मंत्री, उपाध्यक्ष, वीर पिता नवलचंद जी भूरा सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति में मशीन फीता खोलकर समर्पित की गई। अस्पताल मैनेजमेंट कमेटी की ओर से निर्मल जी धारीवाल, राजेंद्र जी लूणिया, मनीष जी बोथरा आदि ने आभार ज्ञापित किया। नवकार महामंत्र जाप एवं आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के जय-जयकारों के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसी क्रम में श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति की ओर स्थानीय पी.बी.एम. अस्पताल के शिशु विभाग में 20 नेबुलाइजर मशीनें एवं समता बहू मंडल की ओर से वृद्धाश्रम में दो व्हील चेयर भेंट की गईं।

-राजेंद्र गोलछा

अलाय। शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का भव्य चातुर्मास सम्पन्न हुआ। इस दौरान कई शिविरों के आयोजन के साथ आयंबिल की लड़ी, प्रतिदिन 1 घंटे नवकार महामंत्र जाप, तेले, पौषध, संवर सहित अन्य अनेक तपाराधनाएँ हुई।

-सुमित सुराणा

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

सारोठ। शासन दीपिका साध्वी श्री हींकार श्री जी म.सा. के पावन सान्निध्य में साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. के देवलोकगमन पर गुणानुवाद सभा का आयोजन उच्च माध्यमिक विद्यालय में किया गया। साध्वी श्री जी ने फरमाया कि 'जीवन पानी की बूँद के समान है, कब मिट जाए पता नहीं।' स्मृतिशेष साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. का जैसा नाम था वैसा ही उनका उच्च व्यवहार था। सारोठ में जन्मी साध्वी श्री सुखदा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु पर श्रद्धा के बिना हमारा जीवन अधूरा है, क्योंकि गुरु हमारे जीवन निर्माता हैं। स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं ने गद्य-पद्य में भाव रखे। गुणानुवाद सभा में अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। **-नोरतमल बाबेल**

ब्यावर। दीर्घतपस्विनी सुश्राविका लीलाबाई कोठारी के 111 उपवास की तपस्या पर उनका बहुमान किया गया। कार्यक्रम में संघ अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री, वरिष्ठ सदस्यों व पूर्व अध्यक्ष सहित गणमान्य जनों ने शॉल, माला व मोमेंटो प्रदान किया।

-नोरतमल बाबेल

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

बुरहानपुर। शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्मा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन वर्षावास में श्रावक-श्राविकाओं एवं बाल-युवाओं का उत्साह देखते ही बनता था। चातुर्मास में साध्वी श्री सर्वज्ञ श्री जी म.सा. के 11 तेले एवं साध्वी श्री अणिमा श्री जी म.सा. के प्रतिदिन एकासन हुए।

चारित्रात्माओं के सान्निध्य में भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर 25 तेला तप हुए। चातुर्मास काल में बच्चों, पुरुषों एवं महिलाओं के शिविर आदि आयोजित किए गए। साध्वी श्री जी ने '**कर्मबंध और हमारा जीवन**' विषय पर ज्ञानार्जन कराया। नवरंगी, सप्तरंगी एवं बच्चों में पचरंगी आदि तप हुए। छोटे बच्चों ने पटाखे नहीं जलाने के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। संवर की लड़ी गतिमान रही।

-आशा चोरड़िया

✧✧✧ कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ✧✧✧

हैदराबाद। शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के ऐतिहासिक वर्षावास में गुरुभक्तों का उत्साह दर्शनीय था। अपनी भावाभिव्यक्ति में स्थानीय वक्ताओं ने कहा कि पुण्यवानी का प्रबल योग होने पर ऐसे महापुरुषों का पदार्पण होता है।

श्री उत्तमयश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन सुखों के सागर में तैरने के लिए है, लेकिन हम दु:खों की खाई में डूब रहे हैं। हम केवल आराधक बनकर ही अनावश्यक हिंसा से बच सकते हैं। आपश्री जी ने जीवन का लक्ष्य एवं सोच को बहुत ही उच्च रखने की प्रेरणा दी। चातुर्मास काल में सब में धर्म की ज्योति जल गई। दोपहर में कक्षा एवं ज्ञानचर्चा के माध्यम से ज्ञानार्जन का क्रम चला।

-विजय मुणोत

✧ महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ✧

निफाड़। शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान, थोकड़े, भजन, आगम वाचनी आदि अनेक ज्ञानार्जन की होड़ लगी रही। अनेक भाई-बहिनों

ने सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक आदि तत्त्वज्ञान सीखा। बच्चों व बहिनों के लिए शिविर आयोजित किए गए। तेले की लड़ी, उपवास, एकासन, अठाई, नौ, ग्यारह आदि अनेक तपस्याओं सहित षट्रस तप, चंद्रकला तप, मासखमण आदि अनेक तप हुए। साध्वीवर्याओं द्वारा धर्म प्रभावना से अनेक ऐसे लोग स्थानक में आने प्रारंभ हो गए जो कभी स्थानक नहीं आते थे। चातुर्मास पूर्णाहुति के दिन भाई-बहिनों ने चातुर्मास में सीखे ज्ञान पर विचार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता व क्षमायाचना के भाव व्यक्त किए। **-अशोक कर्नावट**

परतवाड़ा। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के प्रभावशाली प्रवचनों से सम्पूर्ण संघ प्रभावित हुआ। आपश्री जी की पावन प्रेरणा से चातुर्मास में तेले की लड़ी निरंतर चली, जिसमें 70 तेले हुए। साथ ही 5 अठाई, सोनल जी खिलोसिया के 16 उपवास, ऋषभ जी बरड़िया के 14 उपवास आदि तपस्याएँ भी हुई। विमलचंद जी भंसाली लगातार 18 वर्षों से एकासन तप कर रहे हैं। चातुर्मास में अनेक बार नवकार महामंत्र का जाप किया गया।

साध्वीवर्याओं द्वारा सचित्त-अचित्त, नानेश चालीसा, रामेश चालीसा पर प्रश्नपत्र व प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं विशेष दिवसों पर गुणगान किया गया। आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश आचार्य पदारोहण दिवस पर 45 एकासन तप हुए। **-ऋषभ बरड़िया**

बंगाल, बिहार, नेपाल एवं भूटान अंचल

रामपुरहाट। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस स्थानीय संघ द्वारा सामूहिक सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। सामूहिक सामायिक के साथ आचार्य श्री नानेश चालीसा, आचार्य श्री रामेश चालीसा एवं आचार्य श्री नानेश की चिंतनमणियों का सामूहिक पाठ किया गया। वक्ताओं ने द्वय आचार्य भगवन् के जीवन पर विशेष प्रकाश डाला। समता महिला मंडल की बहिनों ने भजन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एक आयंबिल व कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। **-सुशील बाँठिया**

बोलपुर। मुमुक्षु बहिन नेहा जी राखेचा एवं उनके परिजनों का स्थानीय संघ द्वारा निर्मल जी कोठारी के निवास पर 23 नवम्बर को अभिनंदन व बहुमान किया गया। मुमुक्षु बहिन ने अपने उद्बोधन में सभी की धार्मिक अभिवृद्धि की कामना करते हुए संयम मार्ग पर बढ़ने हेतु आशीर्वाद प्रदान करने का निवेदन किया। इस अवसर पर त्याग-प्रत्याख्यान हुए। वक्ताओं ने मुमुक्षु बहिन के भावी संयम जीवन हेतु मंगलकामनाएँ प्रदान की। **-निर्मल कोठारी** श्रमणोपासक

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे व्हाट्सएप्प नं. 9799061990 पर सम्पर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

लीडरशिप ओरिएंटेशन में नवीन साहित्य का विमोचन

नीमच। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से सुंदरम् होटल में दो दिवसीय लीडरशिप ओरिएंटेशन कार्यक्रम का शुभारंभ 19 नवम्बर को हुआ। कार्यक्रम में नवीन कार्यसमिति पदाधिकारियों, प्रवृति संयोजक-सहसंयोजक, संयोजन मंडल सदस्य एवं कार्यसमिति सदस्यों की अनौपचारिक बैठक रखी गई। संघ गतिविधियों के सुचारू संचालन के लिए कार्यसमिति सदस्यों, संयोजक-सहसंयोजक गणों के दायित्व निर्वहन को सहज, सरल व तीव्रगामी बनाने हेतु विचार-विमर्श हुआ।

कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के श्रीमुख से नीमच में फरमाए गए प्रवचनों पर आधारित पुस्तक '**श्रद्धावान लभते ज्ञानम्**' का विमोचन किया गया। इस पुस्तक का अर्थ सहयोग पवन कुमार जी राजेंद्र कुमार जी राजेश कुमार जी भड़कतिया, बदनावर द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित संघ पदाधिकारियों, प्रवृत्ति संयोजक-सहसंयोजक, संयोजक मंडल सदस्य, कार्यसमिति सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही।

-साहित्य संयोजक

द कर्मा क्विज़ के ग्राण्ड फिनाले में विजेता घोषित

नीमच। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत 'द कर्मा क्विज़' के ग्राण्ड फिनाले का आयोजन 18 नवम्बर को नीमच में किया गया। क्विज़ मास्टर श्वेता जी बच्छावत के मार्गदर्शन में सम्पन्न इस कार्यक्रम का इसी दिन दोपहर में सेमीफाइनल राउंड हुआ, जिसमें राष्ट्रीय स्तर की 16 टीमों ने भाग लिया। इनमें से 6 टीम का चयन हुआ एवं 2 टीम को वाइल्ड कार्ड एंट्री दी गई। इन 8 टीम में से ग्राण्ड फिनाले के लिए 3 टीम का चयन किया गया।

विजेता इस प्रकार रहे :-

प्रथम- कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल से- प्रवीण जी दक, प्रियंका जी कोठारी, पूजा जी मेहता।

द्वितीय- छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल से- रिचा जी श्रीश्रीमाल, रेणु जी श्रीश्रीमाल, अमिता जी बोथरा।

तृतीय- मध्य प्रदेश अंचल से- प्रवीणा जी मुणत, शिल्पा जी पिरोदिया, प्रियंका जी कोठारी।

प्रतिभागियों का उत्साह व मेहनत की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। कार्यक्रम को सफल बनाने में नीमच संघ, महिला मंडल, समता युवा संघ सहित सभी कार्यकर्त्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा।

-अश्विनी बैद श्रमणोपासक

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा.

सांसारिक नाम :
सुश्री शांता जी सिरोहिया

जन्म तिथि :
आषाढ़ सुदी 12 संवत् 2018,
दिनांक 25 जुलाई 1961

जन्म स्थल :
बीकानेर (राज.)

दीक्षा स्थल :
भीनासर, बीकानेर (राज.)

दीक्षा तिथि :
आसोज सुदी 2 संवत् 2034,
दिनांक 14 अक्टूबर 1977

व्यावहारिक शिक्षा :
कक्षा 8 तक

परिवार से दीक्षित :
साध्वी श्री पानकँवर जी म.सा.,
साध्वी श्री विरधीकँवर जी म.सा.

दीक्षा प्रदाता :
समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

पारिवारिक परिचय

पिता :
श्री पूनमचंद जी सिरोहिया

माता :
श्रीमती जेठीबाई सिरोहिया

भाई :
पुखराज जी, सुरेश जी, गुलाबचंद जी,
संतोषचंद जी सिरोहिया

बहिन :
पुष्पाबाई, लीलाबाई, अंतरबाई, मंजूबाई

सांसारिक पता :
श्री पूनमचंद जी सिरोहिया
पल्लवी फैंसी, 155, के.के. रोड,
वैंकटपुरम्, अम्बतूर,
चेन्नई-53 (तमिलनाडु)

साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. का देवलोक गमन

उदयपुर। आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी 62 वर्षीय साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा. का 01 दिसम्बर 2023 को प्रात: लगभग 10:40 बजे देवलोक गमन हो गया। आप पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थीं। अस्वस्थता के बावजूद आपने संयम जीवन का दृढ़ता से पालन किया। हर समय स्वाध्याय, शास्त्र वाचन एवं आत्मसाधना में तल्लीन रहती थीं।

आपने आचार्य श्री नानेश के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण कर लगभग 46 वर्ष संयमी जीवन का कठोर पालन किया। आपकी डोलयात्रा दोपहर 2:00 बजे पौषधशाला, भड़भुजा घाटी से रवाना होकर अशोक नगर स्थित मोक्षधाम पहुँची, जहाँ समाजजनों की उपस्थिति में जय-जयकारों के साथ आपके पार्थिव देह को मुखाग्नि दी गई। सभी ने चार-चार लोगस्स का ध्यान किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 02 दिसम्बर को पौषधशाला में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। सभा में साध्वीवर्याओं एवं श्रावक-श्राविकाओं ने साध्वी श्री शांतप्रभा जी म.सा. के गुणों पर प्रकाश डाला।

-पी.के. डागा श्रमणोपासक

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री जयश्री जी म.सा.

सांसारिक नाम : श्रीमती जयश्री जी धोका
जन्म तिथि :
पौष सुदी 1 संवत् 2009, 18 दिसम्बर 1952
जन्म स्थल : बेंगलुरु (कर्ना.)
दीक्षा स्थल : रायपुर (छ.ग.)
दीक्षा तिथि :
फाल्गुन बदी 9 संवत् 2023, 04 मार्च 1967
व्यावहारिक शिक्षा : कक्षा 4 तक
परिवार से दीक्षित :
स्मृतिशेष शासन प्रभावक
श्री धर्मेश मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय पति)
साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा.
दीक्षा प्रदाता :
समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

पारिवारिक परिचय
पिता : श्री हमीरमल जी नाग सेठिया
माता : श्रीमती पानबाई नाग सेठिया
भाई : पुखराज जी, मोहनलाल जी,
गणपतलाल जी नाग सेठिया
बहिनें :
मैनाबाई बोथरा, सायरबाई बोहरा,
सोहनबाई समदड़ा, शांतिबाई बाफना
पति : श्री धर्मीचंद जी धोका
सांसारिक पता :
पुखराज जी, बसंतराज जी रांका सेठिया
नं. 332, आशीर्वाद, 58वाँ क्रॉस,
जैन मंदिर से आगे, तीसरा ब्लॉक,
राजाजी नगर, बेंगलुरु-560010 (कर्ना.)

साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. का देवलोक गमन

जयपुर। आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री जयश्री जी म.सा. का 13 दिसम्बर 2023 को सायं लगभग 4 बजे पंडितमरण हो गया। आपश्री जी ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं से खमत-खामणा कर स्वयं ही संथारे के पच्चक्खाण कर लिए। तत्पश्चात् साध्वी श्री चंद्रप्रभा श्री जी म.सा. ने संथारे के पच्चक्खाण करवाए।

आपकी डोल यात्रा 14 दिसम्बर को प्रात: समता भवन से रवाना होकर महारानी फार्म मोक्षधाम पर पहुँची। मार्ग में सैकड़ों गुरुभक्त आचार्य श्री नानेश-रामेश एवं महासती जी के जयकारों से माहौल गुँजायमान कर रहे थे। मोक्षधाम पर साध्वीश्री जी के सांसारिक परिजनों एवं संघ प्रमुखों ने मुखाग्नि दी। मोक्षधाम में आयोजित गुणानुवाद सभा में अनेक वक्ताओं ने गुणानुवाद किया।

16 दिसम्बर को समता भवन में शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6 के सान्निध्य में आयोजित गुणानुवाद सभा में आपश्री जी ने फरमाया कि गुणानुवाद सुनने का अर्थ है कि अपना आत्म-समीक्षण करें। जन्म-मरण तो अनादिकाल से चला आ रहा है। संथारा साधिका महासती जी संयम रूपी बगीचे के गुलाब थे। साध्वी श्री परागश्री जी म.सा. ने फरमाया कि संयोग और वियोग जीवन के दो पहलू हैं। महासती जी में समभाव था, गंभीरता थी। उन्होंने अपनी मृत्यु को महोत्सव बना दिया। साध्वी श्री समीधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. एवं उपस्थित साध्वीवर्याओं ने गद्य-पद्य में गुणानुवाद किया।

वक्ताओं के क्रम में वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं, महिला मंडल अध्यक्ष एवं महामंत्री, महासती जी के संसारपक्षीय परिजनों आदि ने गुणोत्कीर्तन करते हुए कहा कि वर्ष में 32 आगमों का दो बार अध्ययन करना आपका नियम था। आपने कैंसर जैसी भयंकर बीमारी को समभावों से सहन किया। चार-चार लोगस्स का ध्यान करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

-राजकुमार नाहर श्रमणोपासक

महत्तम महोत्सव : मेरा महोत्सव

NO NAME BLAME

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

[redacted] हम अपने जीवन को जैसा चाहें वैसा ढाल सकते हैं, बना सकते हैं, लेकिन शर्त है कि हमें उस पर विश्वास हो और हम उसके लिए पूर्ण तैयार हों। हमें जो गाइड करें उसके प्रति हमारी गहरी आस्था हो। जहाँ गहरी आस्था होगी वहीं सही रास्ता मिलेगा।

हम सभी की आस्था के केंद्र आचार्य भगवन् का सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव एक-एक पायदान चढ़ रहा है। लगभग 18 माह के इस उत्सव के रंग में हम सभी रंग चुके हैं। इससे जुड़ने का क्रम अभी भी गतिमान है। अपनी रुचि और पुरुषार्थ अनुसार श्रावक-श्राविकाएँ जुड़ रहे हैं और अन्यों से जुड़ने की प्रभावना भी कर रहे हैं।

गुरुदेव के जीवन और उनके चिंतनों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करते हुए '**महत्तम महोत्सव**' के अंतर्गत '**जन-जन में राम**' प्रवृत्ति के माध्यम से '**महत्तम चरण**' ओपन बुक परीक्षा आयोजित की गई है। इस घर बैठे ओपन बुक परीक्षा में अब तक लगभग 7000 प्रतिभागी जुड़ चुके हैं। इस प्रश्न-पुस्तिका को भरकर भेजने की अंतिम 5 फरवरी, 2024 रखी गई है। प्रश्न-पुस्तिका को भरकर भेजने वाले योग्य 500 प्रतिभागियों को पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाएगा। महत्तम चरण पुस्तक के भूल सुधार प्रेषित किए जा रहे हैं। सभी प्रतिभागी कृपया ध्यान में लेने का कष्ट करें।

महत्तम चरण
(एक युगपुरुष की स्वर्णिम संयम यात्रा)

भूल सुधार-

पेज नं. 2- जो विशिष्ट आत्मा स्वयं पाँच प्रकार के आचार का पालन करते हैं और दूसरों से पालन कराते हैं, वे आचार्य हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य ... प्रमुख अंग हैं।

पेज नं. 2- आयरमाणस्य- आयरमाणस्स

पेज नं. 6- नि:स्पृहत- निस्पृहता

पेज नं. 8- वैमयिकी- वैनयिकी

पेज नं. 8- पारिणायिकी- पारिणामिकी

पेज नं. 7- श्री मज्जानाचार्य- श्रीमज्जैनाचार्य

पेज नं. 7- हास- ह्रास

पेज नं. 17- चित्रौड़वालों- चित्तौड़वालों

महत्तम चरण (ओपन बुक प्रश्न पत्रिका)

पेज नं. 11- प्र.4- किसके (के हटा दीजिए)

प्र. 8-

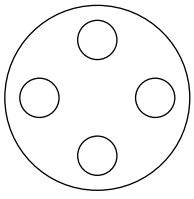

प्र. 9-

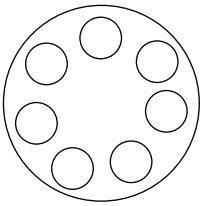

प्र. 10-

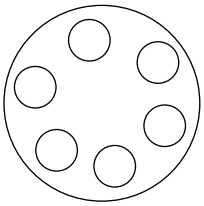

पेज नं. 9– नोट :– सर्वप्रथम आए हुए नाम को ही क्रम में गिनें।
पेज नं. 3– 4. एक राज्य की राजधानी से (में हटा दीजिए)

आध्यात्मिक आरोग्यम् प्रकल्प में 9 बिंदुओं पर आधारित प्रश्न हर सप्ताह पूछे जा रहे हैं, जिनके उत्तर प्रतिभागी बड़े ही उत्साह के साथ भेज रहे हैं। इस प्रकल्प में '**युवती शक्ति**' मंच से भी विजेता घोषित किए जा रहे हैं। पूछे गए प्रश्न इस प्रकार हैं–

प्र.1 किसी घर में सास और बहू के बीच किसी विषय को लेकर बोलचाल हो रही है। इसी दौरान बहू कुछ याद करते हुए अगली बात कहने से पहले 10 सेकंड रुकती है।

ऐसी स्थिति आपके समक्ष होने पर आध्यात्मिक आरोग्यम् का कौनसा गुण अपनाएंगे?

उत्तर: पाँचवाँ बिंदु– विवाद विग्रह से परांगमुखता।

इस प्रश्न का सही उत्तर देने वाले स्टार ऑफ द वीक–

राजेश जी लुणावत, जोधपुर, अर्चना जी जैन, मनावर, रेणुका जी गिड़िया, गंगाशहर

युवती शक्ति– कल्पना जी कांकरिया, नोखा

प्र.2 राहुल दस वर्ष का बच्चा है और एक धार्मिक परिवार से है। गर्मियों का मौसम चल रहा है, अपने संस्कारों के कारण स्कूल से आने के बाद पानी पीने का मन होने पर फ्रिज का ठंडा पानी ना लेकर, घड़े से पानी लेकर पीता है।

इस स्थिति में राहुल ने आध्यात्मिक आरोग्यम् का कौनसा गुण अपनाया?

उत्तर: इन्द्रिय निग्रह का लक्ष्य।

इस प्रश्न का सही उत्तर देने वाले स्टार ऑफ द वीक–

आध्यात्मिक आरोग्यम् ग्रुप– नेहा जी जैन, खैरागढ़, सुनीता जी सुराणा, बेरला, पुनमचंद जी कोटड़िया, पुणे

युवती शक्ति– शीतल जी भूरा, नोखा, समीक्षा जी रेदासनी, जलगाँव, गरिमा जी मरोठी, बंगईगाँव

स्वाध्याय

ऐसे ही बहुत सारे उदाहरणों के माध्यम से आप भी आध्यात्मिक आरोग्यम् के 9 बिंदुओं को समझ सकते हैं। इससे जुड़ने के लिए https://survey.zohopublic.in/zs/4nDe9 लिंक पर जाएँ या QR Code को Scan करें।

संस्कार– अब कर कमाल सीजन–3 (ग्रांड फिनाले)

संस्कार

रविवार 3 दिसंबर को संपूर्ण भारत में 9 से 18 आयु वर्ग के बच्चों ने रोमांचक हर्डल रेस में भाग लिया। लगभग 30 स्थानीय क्षेत्रों में संस्कार प्रतिनिधियों ने बहुत ही उत्साह के साथ कार्यक्रम स्थल को ग्रांड फिनाले के लिए सुसज्जित किया और जूनियर, सीनियर ग्रुप्स के 550 बच्चों को गतिविधियाँ करवाई।

अब कर कमाल सीजन–4 से जुड़ने हेतु नीचे दी गई लिंक को अवश्य भरें–

https://survey.zohopublic.in/zs/W3DKJK या QR Code को Scan करें।

श्रमणोपासक

विविध भेंट मार्फत

01 नवम्बर से 30 नवम्बर 2023

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है-

संघ महाप्रभावक (सौजन्य से प्राप्त)

2,20,000/- सुधीर जी पारसमल जी जैन, पिपलियामंडी

2,20,000/- राजमल जी पंवार, कानवन

2,20,000/- विनोद जी मिन्नी, कोलकाता

20,000/- पांचीदेवी सुराणा, गीदम

समता भवन प्रवृत्ति

समता भवन, संगरिया

50,000/- सुनीता जी तुषार जी बरमेचा, विल्लुपुरम

समता भवन, रावतसर

50,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

समता भवन, लूणकरनसर

11,111/- चंपालाल जी, हुलासमल जी, जतनमल जी, राजेंद्र जी, निर्मल जी अभिषेक जी, फैंसी भूरा परिवार, देशनोक/बीकानेर

समता प्रसार संघ

25,000/- गोलचंद जी सुराणा, अलाय/सूरत (श्रीमती निर्मलादेवी सुराणा की पावन स्मृति में)

संघ सहयोग

2,00,000/- अबीरचंद जी सेठिया, कोलकाता

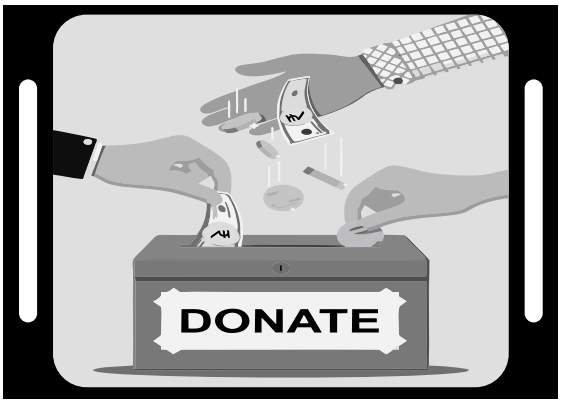

विहार सेवा संयोजन सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

1,00,000/- चंदादेवी अशोक जी कटारिया, रतलाम

इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त)

2,05,000/- पारसमल जी मुणोत, बेंगलुरु

50,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

42,000/- प्रवीणचंद जी मूथा, वापी

34,900/- सुनील कुमार जी अशोक कुमार जी बाफना, शिरपुर

25,500/- राजेंद्र कुमार जी मीठालाल जी देरासरिया, नवसारी

25,000/- शांतिलाल जी मुणोत, बेंगलुरु

22,000/- दिलीप जी पितलिया, हैदराबाद

22,000/- संगीता जी विजयेंद्र जी पितलिया, हैदराबाद

22,000/- रमेश जी पितलिया, हैदराबाद

22,000/- मनोज कुमार जी भूरा, जिराकपुर, मोहाली

21,000/- प्रणय कुमार जी नरेश कुमार जी मोदी, कवर्धा

11,000/- गुप्त

11,000/- नरेश कुमार जी सांखला, त्रिपुर

11,000/- चंद्रशेखर जी आशीष जी खिंदावत परिवार, नागदा

11,000/- अविनाश जी ललवाणी, कोलकाता

11,000/- सुरेशचंद जी सिंघवी, गंगापुर

11,000/- नजरसिंह जी बाबेल, जयपुर

10,500/- मेघराज जी जैन, जयपुर

10,000/- निर्मलचंद जी दिनेश जी पींचा, सेलम/बेंगलुरु
7,500/- दुलीचंद जी जैन कवाड़, कांटाभाजी
7,500/- महावीर प्रसाद जी दुगड़, नोखा/गुवाहाटी
7,100/- मगन जी बच्छावत, अहमदाबाद
7,000/- पुखराज जी मिहिप कुमार जी सतीश जी पदावत, सिकंदराबाद
6,700/- विजय कुमार जी संचेती, रायपुर
5,100/- धर्मचंद जी गेलड़ा और परिवार, बेंगलुरु
5,100/- नाहर इलेक्ट्रिक और मशीनरी (सुशील जी नाहर), बेगूँ
5,100/- मनोज कुमार जी चोरड़िया, जगदलपुर
5,100/- गुलाबचंद जी डोशी, भेडी
5,100/- विकास जी वया, मैसूर
5,100/- अरिहंत उन्नति जी लुणिया, बेंगलुरु
5,100/- उत्तमचंद जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर
5,000/- शांतिलाल जी श्री श्रीमाल, जगदलपुर
5,000/- संध्या जी धाड़ीवाल, रायपुर
5,000/- ऊषादेवी चोरड़िया, बेंगलुरु
4,000/- सुंदरलाल जी सागरमल जी लोढ़ा, चिकारड़ा
3,100/- राजमल जी कोठारी, वलसाड़
2,100/- विनोद कुमार जी लुणावत, जयपुर
2,100/- सुभाषचंद जी हीरावत, कोलकाता
2,000/- आशा जी जैन, भीलवाड़ा
2,000/- गुप्तदान, देशनोक
1,212/- जसराज जी रतनचंद जी बोहरा, अक्कलकुआं
1111/- निर्मल जी अभिषेक जी भूरा फेंसी परिवार, देशनोक/बीकानेर
1111/- कमलेश जी चोपड़ा, शिंदखेड़ा
1100/- सुरेश कुमार जी डागा, तुफानगंज
1100/- धीरज कुमार जी नाहर, बेगूँ
1100/- विजयसिंह जी अमरसिंह जी मेहता, बड़ीसादड़ी
1100/- रोशनलाल जी मनीष जी भरत जी खैरोदिया, निम्बाहेड़ा
1000/- लालचंद जी मारू, बड़ीसादड़ी
1000/- सुरेश कुमार जी मुरड़िया, कानोड़
1000/- संपतराज जी बोहरा, ब्यावर
600/- रत्ना जी गोखरु, भीलवाड़ा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मधु जी शीतल कुमार जी भानावत, उदयपुर, सरोज जी मेहता, बड़ीसादड़ी, प्रमोद जी मेहता, नवसारी, विमलादेवी भूरा, देशनोक, गुप्तदान, देशनोक

दानपेटी योजना

60,000/- माणकचंद जी धूड़मल जी डागा, बेंगलुरु
21,000/- घेवरचंद जी केशरीचंद जी गोलछा, गुवाहाटी
18,000/- जेठीदेवी कुमददेवी सिपानी, बेंगलुरु
15,000/- मदनलाल जी भूरा, गुवाहाटी
15,000/- ओमप्रकाश जी भूरा, गुवाहाटी
11,000/- इंजीनियरिंग एंटरप्राइजेज (अजय), गुवाहाटी
11,000/- कन्हैयालाल जी डागा, गुवाहाटी
11,000/- एस.एम. टेक्सटाइल, गुवाहाटी
11,000/- कन्हैयालाल जी नवरतन जी बैद, गुवाहाटी
11,000/- जयचंद जी बोथरा, गुवाहाटी
10,500/- निर्मल जी बोथरा, गुवाहाटी
7,100/- राजेंद्र जी राकेश जी बैद, गुवाहाटी
7,011/- यशोदाबाई देसरला, बेंगलुरु
5,100/- एस.आर. इंफोटेक, गुवाहाटी
5,100/- ओसवाल एंटरप्राइजेज, गुवाहाटी
5,100/- मोपेड हाऊस, गुवाहाटी
5,100/- कन्हैयालाल जी सोमादेवी बैद, गुवाहाटी
5,100/- चंद्रशेखर जी बोथरा, गुवाहाटी
5,100/- मनोज कुमार जी मुकेश कुमार जी, गुवाहाटी
5,100/- श्रीचंद जी नितेश जी बैद, गुवाहाटी
5,100/- रितेश जी बोथरा, गुवाहाटी
5,100/- धनराज जी गोलछा, गुवाहाटी
5,100/- आसकरण जी झंवरलाल जी पींचा, गुवाहाटी
5,100/- लूणकरण जी बोथरा, गुवाहाटी
5,100/- संपतलाल जी भूरा, गुवाहाटी

5,100/– कांतादेवी बोथरा, गुवाहाटी
5,100/– अभयचंद जी अशोक कुमार जी ललवानी, बेंगलुरु
5,100/– सुमन जी लुणिया, बेंगलुरु
4,200/– सुरेंद्र कुमार जी कांकरिया, गुवाहाटी
4,100/– बाबुलाल जी नवलखा, गुवाहाटी
3,500/– बाबुलाल जी किशन कुमार जी गांधी, बेंगलुरु
3,100/– **का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त-** शशांक जी गिड़िया, बेंगलुरु, **गुवाहाटी से**– ताराचंद जी बोथरा, प्रेमचंद जी पारसमल जी गांधी, जीतमल जी पुखराज सुराणा, महावीर प्रसाद जी दुगड़, मगनमल जी नवलखा
2,700/– नवरतन जी मेहर, बेंगलुरु
2,121/– कमलेश कुमार सिंघवी, बेंगलुरु
2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गुवाहाटी से– रवि जी दस्साणी, पवन कुमार जी सांखला, आशीष टेक्सटाइल एजेंसी, रतनलाल जी संजय जी पारख, पानमल जी सेठिया, इंद्रचंद जी तातेड़, योगेंद्र कुमार जी डागा, विजय कुमार जी बोथरा, महेंद्र जी सुरेंद्र जी चोरडिया, कमलचंद जी पटवा, नवरतनमल जी गोलछा, जीवराज जी पींचा, धर्मेंद्र कुमार जी सांखला, सुंदरलाल जी सिपानी, अजयसिंह जी डोसी, श्यामसुंदर जी सिपानी, राजकुमार जी सांखला, **बेंगलुरु से**– इंद्रा जी दक, अशोक कुमार जी प्रशांत जी दक, कोमल कुमार जी गांधी, मेघराज जी भरत कुमार जी डागा, कनकमल जी नंदावत
1,800/– प्रकाशचंद जी कोठारी, बेंगलुरु
1,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गुवाहाटी से– इंद्रजीत जी नवलखा, दीपचंद जी नवलखा, **बेंगलुरु से**– रामूबाई गन्ना, धरमचंद लक्ष्मीलाल ब्रदर्स एंड कंपनी, परेश कुमार जी कांकरिया
1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- रोशनलाल जी मनीष जी भरत जी खेरोदिया, निम्बाहेड़ा, अशोक कुमार जी अभिषेक जी मेहता, चित्तौड़गढ़ (अरिहंत मेहता की प्रथम वर्षगाँठ के उपलक्ष में), **गुवाहाटी से**– उदयचंद जी बाफना चैरिटेबल ट्रस्ट, शुभकरण जी भंसाली, नवीन कुमार संचेती, प्रकाशचंद जी राहुल जी हर्ष जी बोथरा, चांदमल जी सुरेंद्र जी कोठारी, झुमरमल जी पींचा, उत्तमचंद जी लुणावत, भंवरलाल जी लालानी, कन्हैयालाल जी सिपानी, दिलीप कुमार जी डागा, किशोर जी मालू, मनोज कुमार जी राकेश जी कांकरिया, अमित ऑटो सेंटर, सुनील कुमार जी सुधीर कुमार जी बोथरा, राजेंद्र जी कांकरिया, पन्नालाल जी भूरा, महावीर जी नाहटा, जोगराज जी नवीन कुमार जी नवलखा, संपतराज जी सुरेश जी कांकरिया, गणेश जी गोलछा, राजेंद्र जी लूणिया, अमरचंद जी पटवा, बसंत जी पटवा, मगनमल जी छल्लाणी, शांतिलाल जी नाहटा, मोहनलाल जी बैद, नेमीचंद जी सुराणा, अशोक कुमार जी सेठिया, राजेंद्र जी दस्साणी, जीवराज जी चंपालाल जी, पारसमल जी बरड़िया, किरणदेवी चोरड़िया, संदीप कुमार बोथरा, झंवरलाल जी बैद, अशोक कुमार जी लुणावत, प्रकाशचंद जी रतनलाल जी बोथरा, मेघराज जी धीरज जी पुगलिया, विनोद कुमार जी दुगड़, राजेंद्र जी दुगड़, पंकज जी सुराणा, राजेश जी छाजेड़, निर्मल कुमार जी भूरा, अमरचंद जी गोलछा, शिखरचंद जी राकेश जी पींचा, सुशील जी मदन जी डागा, बालचंद जी राखेचा, कन्हैयालाल जी बाफना, **बेंगलुरु से**– अरुण कुमार जी मुणोत, संपतराज जी गौरव जी दक, निर्मल कुमार जी मोगरा, पारसमल पवन कुमार जी मुणोत, रामचंद्र जी गुंदेचा, दीपक कुमार जी भटेवरा, सचिन कुमार खीचा, ऊषादेवी जी चोरड़िया, माणकचंद जी मारू, दिलीप कुमार जी दक
700/– आनंदमल जी बोथरा, गुवाहाटी
700/– संपतलाल जी छाजेड़, गुवाहाटी
500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गुवाहाटी से– पवन जी चोरड़िया, मनोज कुमार जी वैभव कुमार बांठिया, सुंदरलाल जी कांकरिया, मुकेश जी लुणावत, विमलादेवी धारीवाल, सुरेश जी छाजेड़, कन्हैयालाल जी चोरड़िया, दुलीचंद जी फलोदिया, पदमचंद जी बोथरा, अशोक कुमार जी बरड़िया, मगनमल जी बैद, **बेंगलुरु से**– सुनील कुमार जी देरासरिया, प्रकाश जी सुराना, सुरेशचंद बडोला, सिद्धार्थ जी श्रीमाल

उच्च शिक्षा योजना

11,000/- राजेंद्र कुमार जी मीठालाल जी देरासरिया, नवसारी

जीवदया

5,100/- प्रकाशचंद जी अमित कुमार जी सुराणा, नोखागाँव

5,000/- गोलचंद जी सुराणा अलाय/सूरत (श्रीमती निर्मलादेवी सुराणा की पुण्यस्मृति में)

5,000/- गुप्त

5,000/- ऊषादेवी क्षितिज जी विनीत जी वैभव जी चोरड़िया, बेंगलुरु

3,000/- गुप्तदान, कोलकाता

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्रेणिक जी बोथरा, हावड़ा, मुकेश जी राजेश जी बुरड़ परिवार, मलकानपुरी (ज्योति जी नरेंद्र जी चोरड़िया, शहादा की पुण्यस्मृति में), प्रवीण जी सुनील जी विजय जी चोरड़िया परिवार, चांगोटोला (श्रीमती रूपल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में), हनुमानमल जी सुंदरलाल जी लुणावत, नोखागाँव (ललित कुमार जी लुणावत के अठाई की तपस्या के उपलक्ष में), निर्मल जी साहिल जी शुभम जी खींवसरा, ब्यावर (एकता की अठाई के उपलक्ष में)

1,500/- रोमिका जी नवलखा, बारडोली

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से- शांतिलाल जी वीरेंद्र जी राजेंद्र जी धर्मेंद्र जी छल्लाणी, दिल्ली, गुप्त, जगदलपुर, अनुपम जी टाटिया, नागपुर, निर्मल जी खींवसरा, ब्यावर (छोटू बंगाली के अठाई तप के उपलक्ष में), **ज्योति जी नरेंद्र जी चोरड़िया, शहादा की पुण्यस्मृति में प्राप्त-** वैशाली जी नीरज जी बेताला, इंदौर, सोनाली जी सर्वेश जी संचेती, इंदौर, रूपाली जी परेश जी दुगड़, दोंडाईचा, दिव्यानी जी खिलेश जी कर्णावट, पुणे, दीपिका जी सुशील जी लुंकड़, फलोदी

1,001/- जयप्रकाश जी पुगलिया, कोलकाता

888/- नेहा जी जैन, जोधपुर

666/- मूलचंद जी मुकेश जी छाजेड़, साजा

600/- कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

500/- मोनिका जी अंशुल जी जैन, पुणे

500/- संजय जी तेजस जी सुराणा, बेरला (श्रीमती रूपल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

500/- आरती जी नवलखा, बारडोली

महत्तम महोत्सव

25,000/- उमेश कुमार जी मेहता, सूरत

साहित्य प्रकाशन सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)

1,50,000/- पवन कुमार जी, राजेंद्र कुमार जी, राजेश कुमार जी भड़कतिया, बदनावर

2,600/- आरती जी नवलखा, बारडोली

साहित्य सदस्यता सहयोग

11,000/- गुप्तदान, इंदौर

5,000/- कैलाशबाई बलाई, बाड़ी

5,000/- सुशील कुमार जी मेहता, ब्यावर

2,000/- मीना जी पटवा, हावड़ा

1,000/- दिनेश जी श्रीश्रीमाल, कवर्धा

समता संस्कार पाठशाला

5,100/- सुमन जी अरिहंत जी लुणिया, बेंगलुरु

समता सरिता सेवा/विहार सेवा

25,000/- गोलचंद जी सुराणा, अलाय/सूरत (श्रीमती निर्मलादेवी सुराणा की पुण्यस्मृति में)

11,000/- राजेंद्र कुमार जी मीठालाल जी देरासरिया, नवसारी

5,000/- ऊषादेवी क्षितिज जी विनीत जी वैभव जी चोरड़िया, बेंगलुरु

2,501/- निर्मल कुमार जी लोढ़ा, मुंबई

1,100/- गुप्त, जगदलपुर

1,000/- गुप्त

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

11,000/- मनोज कुमार जी भूरा, देशनोक/कोलकाता

10,000/- गुप्तदान, लाला बाजार

5,100/- श्री स्थानकवासी साधुमार्गी जैन संघ, सिलचर

5,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, हावड़ा

5,000/- गुप्तदान, ब्यावर
5,000/- रीता जी अजीत जी ललवानी, बांसवाड़ा
5,000/- स्व. श्री धर्मचंद जी भूरा परिवार, हावड़ा/देशनोक
5,000/- मदनलाल जी कटारिया, रतलाम
3,000/- लोढ़ा परिवार, मदुरांतकम्
2,100/- पवन जी लुणिया, कोलकाता
2,100/- गुप्तदान
2,100/- स्वर्णीबाई मूथा, नासिक

2,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- किरण जी जैन नगरीवाला, प्रतापगढ़, महेंद्र सुंदरलाल मुणोत, औरंगाबाद, अभय कुमार जी भंडारी, जावरा, अशोक जी देशलहरा, गुंडरदेही, केशरीचंद जी कांकरिया, नोखा
1,500/- निर्मलदेवी पदमचंद जी मूथा, वापी
1,320/- नाहरसिंह राठौड़, नीमच
1,100/- संजय जी भटेवरा, पुणे
1,100/- दिलीप जी भटेवरा, पुणे
1,100/- राकेश जी कोठारी, मुंबई
1,000/- धर्मचंद जी चोरड़िया, सोलापुर

श्रमणोपासक भेंट

1,121/- निर्मल जी अभिषेक जी भूरा फेंसी परिवार, देशनोक/बीकानेर (पूजा जी के विवाह के उपलक्ष में)
1,100/- दीपेश जी शाह, थांदला (रमेशचंद जी गेंदालाल जी शाह की पुण्यस्मृति में)
1,100/- चौथमल जी सुरेशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर (श्रीमती अनोखीदेवी जैन की पुण्यस्मृति में)
1,100/- अशोक जी अभिषेक जी मेहता, चित्तौड़गढ़ (अरिहंत मेहता की प्रथम वर्षगाँठ के उपलक्ष में)
500/- कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

25,000/- गोलचंद जी सुराणा, अलाय/सूरत (श्रीमती निर्मलादेवी सुराणा की पुण्यस्मृति में)
5,000/- ऊषादेवी क्षितिज जी विनीत जी वैभव जी चोरड़िया, बेंगलुरु

:: विशेष ::

श्रमणोपासक सदस्यता-5, महिला समिति सदस्यता-23, साहित्य सदस्यता-12

:: 01 अप्रैल 2023 से 31 नवम्बर 2023 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.04.23	1,100/-	UPI सिंपल जैन
08.05.23	3,500/-	UPI राहुल
12.05.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.05.23	1,000/-	UPI विनोद बम्ब
06.07.23	3,000/-	नकद
20.07.23	1,000/-	UPI पिंकू
26.07.23	1,000/-	UPI प्रियंका
06.09.23	5,500/-	Cheque 403
19.09.23	2,100/-	UPI संजय
04.10.23	3,100/-	UPI मुकुल बोहरा
05.10.23	39,200/-	Ch. No. 732198
11.10.23	2,500/-	UPI ऋषभ
15.10.23	1,100/-	UPI विकास
16.10.23	21,000/-	Ch. No. 732210
30.10.23	2,100/-	UPI स्तुति
31.10.23	2,100/-	Ch. No. 612857
07.11.23	3,100/-	नकद
10.11.23	12,000/-	Ch. No. 43

22.11.23	2,000/-	UPI ऋषभ	11.08.23	26,120/-	नकद
यूको बैंक			**ए.यू. बैंक**		
06.07.23	5,100/-	नकद	16.08.23	20,600/-	नकद

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

श्रमणोपासक

साधुमार्गी पब्लिकेशन से जुड़ें

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रवचन, चिंतन, कथा, कहानी एवं अन्य विविध विधाओं पर अब तक लगभग 340 धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस धार्मिक साहित्य के अध्ययन, पठन एवं मनन से अवश्य ही आपका जीवन परिवर्तित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। आप इन साहित्यों के लिए दिए गए QR Code, लिंक https://sadhumargi.com/sangh-activities/sahityikpravartiyan/ पर जाकर एवं मोबाइल नं. 8209090748 पर कॉल करके सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

REQUIREMENT

AN OPPORTUNITY FOR CANDIDATES INTERESTED IN SANGH SEVA

"Siddhim Global Education" is a Public Charitable Trust and a "समुद्देशीय संस्था" of Shri Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh. We are setting up a not for profit inspirational residential school near Kishangarh, Jaipur, Rajasthan. It will be an all Jain school. The school will reimagine & design a globally relevant yet rooted-in-values learning experience based on Jain ethos that will allow learners to bring integrity, peace, progress and excellence to the society.

Position : Site Supervisor and Foreman
Location : Dudu, Jaipur
Required : 3-5 yrs+ experience in residential/ institutional project.

- ★ Scheduling, supervising and co-ordinating construction activities, manage teams
- ★ Ensure project adherence to timelines, budgets, and quality standards
- ★ Collaborate with contractors and vendors in coordination with project manager

Position : Junior Engineer
Location : Dudu, Jaipur
Required : 2 yrs+ experience in residential/ institutional project.

- ★ Assist in project planning and coordination
- ★ Conduct site inspections and ensure safety compliance
- ★ Collaborate with contractors and vendors in coordination with project manager
- ★ Track project budget and resolve on-site issues
- ★ Effective communication and team work abilities
- ★ Familiarity with construction drawings and specifications

Salary : negotiable as per competence of individual candidate.

Contact : 97173-06905, Send CV : aman.jaroli@siddhim.org

प्रथम पुण्यस्मरण

सुश्रावक नेत्रदानी
स्व. श्री जुगराज जी बोथरा

:: **जन्म** :: 07 दिसम्बर 1955, उदासर (बीकानेर)
:: **स्वर्गवास** :: 16 जनवरी 2023, गुवाहाटी (आसाम)

जिनके शुभ कर्मों से महकता है आज भी हमारा घर-आँगन।
उनके स्मरण मात्र से दिल सम्मान से भर जाता है।।

परम पूज्य आचार्य श्री नानेश एवं परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामेश के पावन स्मरण से अपने दिन का शुभारंभ करने वाले उदासर निवासी गुवाहाटी प्रवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक **स्व. श्री जुगराज जी बोथरा** का जीवन गुणों से परिपूर्ण था। प्रतिपल गुरुदर्शन की भावना को संयोए रखकर आपने चारित्रशील आत्माओं की सेवा में सदैव अग्रगण्यता रखी। धर्माराधना से आपने अपने जीवन को सार्थक कर हम सभी परिजनों को धर्म एवं गुरु समर्पणा का मार्ग दिखाया।

आप श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की गरिमापूर्ण महाप्रभावक सदस्य से अलंकृत थे। आपने संघ के पूर्वोत्तर अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर वर्ष 2017 से 2021 तक कर्त्तव्य निर्वहन किया। शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. ने आपको 'चौकीदार' की उपमा दे रखी थी। धर्म व समाज के प्रति समर्पित रहते हुए आपने समता भवन, गुवाहाटी के सामने वाले मार्ग का नाम आचार्य श्री नानेश मार्ग घोषित करवाने हेतु सार्थक प्रयास किए। आपके दिखाए मार्ग पर अनवरत गतिशील आपका सम्पूर्ण परिवार आज भी धार्मिक संस्कारों व सामाजिक सरोकारों से अपने जीवन को संघ व गुरुनिष्ठा में सर्वोपरि रखा रहा है। आपकी धर्मसहायिका, पुत्र-पुत्रवधू एवं पौत्रादि संघ सेवा हेतु सदैव ही समर्पित रहते हैं।

नेत्रदानी सुश्रावक श्री जुगराज जी बोथरा सुपुत्र स्व. श्री फुसराज जी बोथरा का 68 वर्ष की आयु में 16 जनवरी 2023 को गुवाहाटी में देवलोकगमन हो गया था। आपके प्रथम पुण्यस्मरण दिवस पर परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि आपकी दिवंगत आत्मा को सर्वोच्च गति व शाश्वत सुख प्रदान करें।

:: *श्रद्धावनत्* ::

पांचादेवी बोथरा (माता जी), **सरोजदेवी बोथरा** (धर्मसहायिका), **इलायचीदेवी बोथरा** (काकीसा), **विजय कुमार-ऊषादेवी बोथरा** (अनुज-अनुजवधू), **रितेश कुमार-मोनिका बोथरा** (पुत्र-पुत्रवधू), **वर्षा बोथरा** (अनुज पुत्री), **रौनक बोथरा** (पौत्र)
ससुराल पक्ष- राजेंद्र कुमार दिलीप कुमार नाहटा, गंगाशहर (बीकानेर)

प्रतिष्ठान
Vasundhra Trading Co.
Shop No. 1, Ground Floor, Bulbul Bazar,
S.R.C.B. Road, Fancy Bazar, Guwahati-781001 (Assam)
Mob.: 94355-44466

निवास
Jugraj Ritesh Bothra
4/B, 4th Floor, Harikunj Appartment,
Chhatribari, Guwahati (Assam)
Mob.: 88110-47666

स्मृतिशेष

वीर पिता सुश्रावक
श्री रेखचंद जी सांखला

वीर पिता सुश्रावक श्री रेखचंद जी सांखला, खैरागढ़ का 22 नवम्बर 2023 को देहावसान हो गया। मूलत: बालेसर निवासी श्री सांखला का जन्म सुश्रावक स्व. श्री चंदनमल जी-बिदामीबाई के घर-आँगन में 15 जुलाई 1941 को छुईखदान में हुआ। माता-पिता ने बाल्यकाल से ही आपको धार्मिक संस्कारों से सुवासित किया। आपने हायर सेकेंडरी तक शिक्षा ग्रहण की। आपका विवाह ताराबाई सुपुत्री श्री मानकलाल जी-कपूरीबाई विनायकिया के साथ 15 जून 1963 को सम्पन्न हुआ। आपने LIC व्यवसाय को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और अध्यक्ष क्लब मेम्बर का गौरव प्राप्त किया। LIC द्वारा आपको चंडीगढ़ में विशेष सम्मान से नवाजा गया। आप बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। आपने पारिवारिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में गौरवशाली प्रतिष्ठा प्राप्त की। देव-गुरु-धर्म के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के अनन्य भक्त थे। आपने नौ की तपस्या दो बार व एक बार सजोड़े, आजीवन दीपावली पर तेला तप से अपना जीवन भावित किया। आपके आजीवन जमीकंद त्याग था।

आप चार भाइयों और दो बहिनों में सबसे बड़े थे। चारों भाइयों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम देखकर आपको राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न की उपमा दी जाती थी। आपके छोटे भाई गौतमचंद जी, स्व. लक्ष्मीलाल जी एवं हरीश जी सांखला ने भी खूब प्रसिद्धि प्राप्त की एवं बहिनें श्रीमती सीताबाई-स्व. श्री मोतीलाल जी पारख, नयापारा राजिम, श्रीमती गंगाबाई-अमृतलाल जी पारख, रायपुर धर्मनिष्ठ हैं।

स्व. श्री सांखला जी लगभग 17 वर्षों तक खैरागढ़ संघ के अध्यक्ष रहे एवं अन्य अनेक संस्थाओं से भी आपका सक्रिय जुड़ाव था। आप से प्राप्त मार्गदर्शन पर चलकर वीर सांखला परिवार हर क्षेत्र में अग्रणी रहता है।

आपकी संसारपक्षीय बहिन साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा., संसारपक्षीय सुपुत्री साध्वी श्री सुनेहा श्री जी म.सा., संसारपक्षीय भतीजी साध्वी श्री सुरक्षण श्री जी म.सा. एवं संसारपक्षीय दोहिती साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. आचार्य श्री रामेश शासन को दैदीप्यमान कर रही हैं। इनके अलावा अन्य संप्रदाय में भी आपके परिवार से भव्यजनों ने भगवान महावीर के पथ का अनुसरण किया है।

:: श्रद्धावनत् ::

संतोष जी-नीता जी, शैलेंद्र जी-सुनीता जी (पुत्र), **शोभा जी-महावीर जी ओस्तवाल (धमतरी), सुषमा जी-खेमचंद जी देशलहरा (दुर्ग), संगीता जी-राजेश जी पारख (दल्लीराजहरा), अनिता जी-मांगीलाल जी ढ़ेलड़िया (बालोद)** (पुत्री-दामाद), **मयंक, प्रतीक-तनु, हर्षित, नमन, आदित्य** (पौत्र-पौत्रवधू), **राहुल देशलहरा, अखिल ओस्तवाल, प्रणेश देशलहरा** (दोहिता), **दर्शना-हेमंत जी चौपड़ा, दिशी-शुभम् जी दुग्गड़, हितांशी ढ़ेलड़िया** (दोहितियाँ-दामाद) **एवं समस्त सांखला परिवार।**

विनम्र श्रद्धांजलि

सुमेरपुर। सुश्रावक डालचंद जी सुपुत्र स्व. श्री सुगनमल जी घोड़ावत

का 15 नवम्बर को 69 वर्ष की आयु में संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आप सरल, सहज, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा के साथ आप राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

रायपुर। बालिका टीया सुपुत्री महावीर जी नाहटा का 18 नवम्बर को देहावसान हो गया। जन्म से ही आपके हार्ट में छेद था। इतनी व्याधि के बाद भी आप सदैव प्रसन्न रहती और अनेक बार अपनी आँखें दान करने की भावना प्रकट करती। आप साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय भतीजी थी।

उदयपुर। सुश्राविका रतन जी धर्मपत्नी अमरसिंह जी सेठ का 26 नवम्बर को 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, हंसमुख, मिलनसार एवं 12 व्रतधारी श्राविका थी। प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, चारित्रात्माओं की सेवा व जिनवाणी श्रवण का पूरा लाभ लेती थी। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

उदयपुर। सुश्राविका विमलादेवी धर्मपत्नी नवरत्नमल जी चोरड़िया अलाय निवासी का 51 वर्ष की आयु में 7 दिसम्बर को देहावसान हो गया। आप अत्यंत ही मृदुभाषी, मिलनसार, धर्मनिष्ठ महिला थी। आचार्य श्री रामेश के प्रति आप अटूट श्रद्धावान थी। नियमित सामायिक, प्रतिक्रमण तथा स्वाध्याय करती थी। आपको कुछ आगमों के अध्ययन, स्तोत्र व थोकड़े आदि कंठस्थ थे। आपने अठाई, दो माह एकान्तर व अन्य तपस्याओं से जीवन भावित किया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

रतलाम। सुश्रावक राजमल जी नांदेचा का 78 वर्ष की आयु में 13 दिसम्बर को देहावसान हो गया। आप विगत लंबे समय से श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम में लाइब्रेरियन के रूप में सेवाएँ दे रहे थे। आप मालवी के सुप्रसिद्ध कवि थे। साहित्य में आपकी विशेष रुचि थी। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अपूर्व श्रद्धाभाव रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

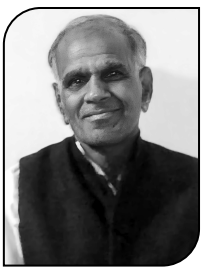

जैन संस्कार पाठ्यक्रम टॉपर - 2023

क्र.	नाम	स्थान	वरीयता
	भाग 1		
1	ममता राखेचा	इंदौर	प्रथम
2	खुशबू तातेड़	नंदुरबार	द्वितीय
3	सोनू सुराणा	गंगाशहर	तृतीय
	भाग 2		
4	काजल जैन	चंडीगढ़	प्रथम
5	रितु जैन	किशनगढ़	द्वितीय
6	गीतांजलि आंचलिया	गंगाशहर	तृतीय
	भाग 3		
7	पुष्पा जैन	कलंगपुर	प्रथम
8	सोनल बरड़िया	नोखा	द्वितीय
9	पूजा दक	बड़ीसादड़ी	तृतीय
	भाग 4		
10	डिम्पल देशलहरा	गुंडरदेही	प्रथम
11	तृप्ति दुग्गड़	विहामांडवा	द्वितीय
12	प्रमिला सोनावत	चेन्नई	तृतीय
	भाग 5		
13	कविता मोदी	निम्बाहेड़ा	प्रथम
14	अनिता सुराणा	चौपड़ा	द्वितीय
15	कोमल जैन	सेतरावा	तृतीय
	भाग 6		
16	ममता कोठारी	अजमेर	प्रथम
17	रिंकु नाहटा	गंगाशहर	द्वितीय
18	राखी पोखरना	विजयनगरम्	तृतीय
	भाग 7		
19	रेणु अलावत	चित्तौड़गढ़	प्रथम
20	अस्मिता जैन	सूरत	द्वितीय
21	नम्रता कोठारी	वापी	तृतीय

क्र.	नाम	स्थान	वरीयता
	भाग 8		
22	कोमल खारिया	विहामांडवा	प्रथम
23	पायल बैदमूथा	विहामांडवा	द्वितीय
24	रीनादेवी नाहटा	सूरत	तृतीय
	भाग 9		
25	प्रीति बरड़िया	भीनासर	प्रथम
26	संगीता सुखाणी	गंगाशहर	द्वितीय
27	नीलम बुच्चा	सूरत	तृतीय
	भाग 10		
28	कांता रामपुरिया	कोलकाता	प्रथम
29	रंजना चंडालिया	चित्तौड़गढ़	द्वितीय
30	कल्पना जैन	मुंबई	तृतीय
	भाग 11 (आगम)		
31	ज्योति सुराणा	रायपुर	प्रथम
32	वर्षा कवाड़	बालोद	द्वितीय
33	संजू बांठिया	भीलवाड़ा	तृतीय
	भाग 11 (तत्त्व)		
34	जसवंत कुमार मुणोत	बेंगलुरु	प्रथम
35	चंद्रकांता डागा	ब्यावर	द्वितीय
36	मिताली पितलिया	भीलवाड़ा	तृतीय
	भाग 12 (आगम)		
37	रिंकल जैन	भीम	प्रथम
38	मैनादेवी बैद	नोखा	द्वितीय
39	प्रेमलता डागा	कोलकाता	द्वितीय
40	लक्ष्मीदेवी फलोदिया	नोखा	तृतीय
	भाग 12 (तत्त्व)		
41	सुषमा बैद	चेन्नई	प्रथम
42	आरती सेठिया	कोलकाता	द्वितीय
43	सरिता संखलेचा	अमरावती	तृतीय

जैन संस्कार पाठ्यक्रम

क्र.सं.	नाम	शहर का नाम	पद	संपर्क सूत्र
1	नीतू जी लोढ़ा	मदुरांतकम्	संयोजिका	9442470666
2	पुखराज जी बोथरा	अहमदाबाद	संयोजन मंडल	9327000858
3	रत्ना जी ओस्तवाल	राजनांदगाँव	संयोजन मंडल	9827187281
4	नवीन जी कोठारी	बीकानेर	संयोजन मंडल	9414138468

अंचल संयोजिका

क्र.सं.	नाम	शहर का नाम	अंचल	संपर्क सूत्र
1	पूजा जी सहलोत	निम्बाहेड़ा	मेवाड़	7597904471
2	गुड़िया जी जैन	चाड़ी	बीकानेर-मारवाड़	9829386941
3	शशिकला जी डांगी	ब्यावर	जयपुर-ब्यावर	9079065290
4	सपना जी मुणोत	रतलाम	मध्य प्रदेश	9424884391
5	मीनाक्षी जी जैन	रायपुर	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	8770908003
6	प्रेमलता जी भुरट	हुबली	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	8660207764
7	प्रियंका जी बोरा	चेन्नई	तमिलनाडु	9840800502
8	रीता जी बांठिया	अहमदाबाद	मुंबई-गुजरात	9409511200
9	रितु जी दुगड़	नागपुर	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	7709539960
10	रीनू जी बोथरा	बहरमपुर	बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान	9734891450
11	सरला जी बोथरा	गुवाहाटी	पूर्वोत्तर	9864064520
12	सपना जी भूरा	जीरकपुर	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा	7307091538

किसी भी प्रकार की सहायता हेतु अंचल संयोजिका से संपर्क कर सकते हैं। **-संयोजिका, जैन संस्कार पाठक्रम**

अनुरोध

सभी स्थानीय संघों के अध्यक्ष, मंत्री व क्षेत्रीय प्रतिनिधियों से आत्मीय अनुरोध है कि यह सुनिश्चित करें आपके क्षेत्र में प्रत्येक रविवार को रविवारीय समता शाखा का आयोजन किया जा रहा है। समता शाखा के साथ-साथ इस दिन व्याख्यान का भी आयोजन हो तो सोने पे सुहागा होगा। व्याख्यान में चारित्रात्माओं का सान्निध्य मिले तो बहुत ही अच्छी बात है। यदि किसी क्षेत्र में चारित्रात्माओं का विचरण नहीं हो रहा है तो वहाँ स्थानीय स्वाध्यायी भाइयों द्वारा व्याख्यान की व्यवस्था करें ताकि अवकाश के दिन समता शाखा में उपस्थित होने वाले श्रावक-श्राविकाओं एवं बाल-युवा पीढ़ी को भगवान महावीर की अमृतवाणी श्रवण का लाभ सहज ही प्राप्त हो सके। यदि स्थानीय स्वाध्यायी उपलब्ध न हो तो समता प्रचार संघ के संयोजक निर्मल जी संघवी से मो.नं. 9229191008 पर संपर्क कर आस-पास के क्षेत्र से स्वाध्यायी भाई-बहिन को आमंत्रित किया जा सकता है। समता शाखा हेतु स्थानीय साधुमार्गी परिवारों को प्रेरणा देकर उनकी सौ प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करें। छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल में ऐसा प्रयास सफल रहा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष **राष्ट्रीय महामंत्री**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की नेश्राय में सभी चारित्रात्माओं की विहार सूची

दिनांक-14-12-2023

4. मध्य प्रदेश अंचल

क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सम्पर्क सूत्र	क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सम्पर्क सूत्र
1	**परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**	4	अर्जुन जी पाटीदार का निवास, बरखेड़ा पंथ, मंदसौर (म.प्र.)	अर्जुन जी पाटीदार 8349852030 मनोहरलाल जी जैन 9425105061 महेश जी नाहटा 9406201351 7977370892	2	**बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.**	5	समता भवन, संजय गाँधी उद्यान के सामने, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547
3	शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, मूंदड़ा कॉलोनी, अरविंद नगर, उज्जैन (म.प्र.)	संजय जी पावेचा 9826374201	4	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.	5	नीरज फूड्स, सैलाना रोड, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
5	शासन दीपक श्री छत्रांकमुनि जी म.सा.	2	स्कूल में, परतापुर, बैतूल (म.प्र.)	दीपेश जी बोथरा 9977133493	6	शासन दीपक श्री राजन मुनि जी म.सा.	3	शासकीय स्कूल, महेशपुरिया, नीमच (म.प्र.)	अजित जी चेलावत 9425106028
7	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूरकँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी म.सा. (पिपलियामंडी वाले)	12	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली न.–2, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेन्द्र कुमार जी चौधरी 9425369547	8	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)	4	अमृतलाल जी नलवाया का निवास, नाकोड़ा इंटीरियो के पास, टीचर्स कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
9	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा.	5	सागर नमकीन वालों का मकान, अंकुर हॉस्पिटल के सामने, वेद व्यास कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717	10	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले)	5	अशोक जी झेलावत के निवास के सामने, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547
11	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता श्री जी म.सा.	15	समता भवन, यशवंत निवास रोड, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमार जी तातेड़ 9826033624 ललित जी दुग्गड़ 9827013200	12	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.	4	सोमेश्वर जी शर्मा का निवास, क्षीर सागर कॉलोनी, जावद, नीमच (म.प्र.)	नरेंद्र जी गाँधी 9425108224
13	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले)	4	अभिषेक जी कांठेड का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	14	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा श्री जी म.सा.	9	समता सदन, घांस बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
15	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.	4	रविन्द्र ध्यान आश्रम, मेवासा, रतलाम (म.प्र.)	आशीष जी जैन 7747857263 ललित जी कटारिया 9407151009	16	शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला श्री जी म.सा.	4	समता भवन, शुक्रवारिया, जावरा, रतलाम (म.प्र.)	अशोक जी छजलाणी 9424591173 मनीष जी पोखरना 9893482863

17	शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा.	4	बाबुलाल जी सुथार का निवास, बादरी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबुलाल जी सुथार 8305740357	18	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा.	3	तेजालाल जी जाट का निवास, बोराली, धार (म.प्र.)	तेजालाल जी जाट 7999878609
19	शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शना श्री जी म.सा.	3	नेमीचंद जी जैन का निवास, खुटला कलां, खंडवा (म.प्र.)	नेमीचंद जी जैन 9826090054	20	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोद श्री जी म.सा.	3	अमित जी जैन का निवास, काटजू नगर, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
21	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा.	3	प्रदीप जी बोड़ावत का निवास, गाँधी कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	22	शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा.	3	वर्धमान जैन स्थानक भवन, सिंगोली, नीमच (म.प्र.)	पारस जी गाँधी 9406866591
23	शासन दीपिका साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, कंजार्ड़ा, नीमच (म.प्र.)	दिलीप जी भण्डारी 9179679459	24	शासन दीपिका साध्वी श्री सरिश्मा श्री जी म.सा.	3	शासकीय स्कूल, बडिया, धार (म.प्र.)	मनोहरलाल जी ओरा 9893777131
25	शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्मा श्री जी म.सा.	3	अमित जी लोढ़ा का निवास, सनावद, खण्डवा (म.प्र.)	श्रेणिक जी जैन 9826681123	26	शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा.	4	श्री साधुमार्गी जैन स्थानक भवन, पिपलियामंडी, मंदसौर (म.प्र.)	जितेंद्र जी खिंदावत 9425441542
27	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, सुभाष नगर, उज्जैन (म.प्र.)	संजय जी पावेचा 9826374201	28	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.	3	रविन्द्र ध्यान आश्रम, मेवासा, रतलाम (म.प्र.)	आशीष जी जैन 7747857263 ललित जी कटारिया 9407151009
1. मेवाड़ अंचल									
1	शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा.	2	नानेश–रामेश ध्यान केंद्र, गाँधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	हिम्मतसिंह जी अलावत 9414734967 9118848852 विमल कुमार जी कोठारी 9413315050 7976239766	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (उदयपुर वाले)	5	मोहन ज्ञान मंदिर, भूपालपूरा, उदयपुर (राज.)	मुकेश जी पगारिया 9413286163 प्रकाश जी सुराणा 9414166014
3	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. (राजनांदगाँव वाले)	4	समता भवन, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रकाश जी मेहता 9414619476 9784757565 विमल जी दलाल 9414619514	4	शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवर जी म.सा.	10	प्राज्ञ भवन, संजय कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंतसिंह जी रांका 9829178431 9462595676 पारसमल जी कुकड़ा 9462241948
5	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.	5	आनंदयश सामायिक भवन, डूंगला, चित्तौड़गढ़ (राज.)	धनराज जी नागौरी 9413045964, 9116598635	6	शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा.	4	हिम्मत जी सामोता का निवास, प्रताप मुनि ज्ञानालय, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रकाश जी मेहता 9414619476 9784757565 विमल जी दलाल 9414619514
7	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिता श्री जी म.सा.	4	समता भवन, करजू, प्रतापगढ़ (राज.)	दिलीप जी नागौरी 9929668290	8	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (देशनोक वाले)	3	सिंघवी मार्बल फैक्ट्री, अजोलिया का खेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सिंघवी मार्बल फैक्ट्री 9057811922

9	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा.	3	समता भवन, दांता (नानेश नगर), चित्तौड़गढ़ (राज.)	सुरेश जी पोखरना, दांता (नानेश नगर) 8890899340	10	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा.	5	आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र, राणा प्रताप नगर स्टेशन के सामने, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495
11	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवर जी म.सा.	4	नारायणलाल जी गायरी का निवास, तलाऊ, चित्तौड़गढ़ (राज.)	नारायणलाल जी गायरी 8290118595	12	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा.	12	कोठारियों की हवेली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495
13	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती जी म.सा.	7	समता भवन, आदर्श कॉलोनी, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलाल जी पोरवाल 9461273789 सत्यमेव जी सेठिया 9414395573	14	शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा.	3	स्कूल में, गिरदोडा, प्रतापगढ़ (राज.)	अनिल जी जैन 9784390929 मानमल जी जैन 9983235836
15	शासन दीपिका साध्वी श्री करुणा श्री जी म.सा.	4	राजेन्द्र जी कोठारी का निवास, नवरत्न कॉम्प्लेक्स, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495	16	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा.	5	शंकर समता भवन, शास्त्री नगर, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंतसिंह जी रांका 9829178431 9462595676 पारसमल जी कुकड़ा 9462241948
17	शासन दीपिका साध्वी श्री गरिमा श्री जी म.सा.	3	समता भवन, कुंथवास, उदयपुर (राज.)	सोहनलाल जी जैन 9636590521	18	शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा.	3	अरिहंत भवन, सैंती, चित्तौड़गढ़ (राज.)	हिम्मतसिंह जी अलावत 9414734967 9118848852 विमल कुमार जी कोठारी 9413315050 7976239766
19	शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञा श्री जी म.सा.	4	समता साधना भवन, कानोड़, उदयपुर (राज.)	रमेश जी कुदाल 9414683309 तखतमल जी लसोड़ 9166663441	20	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा.	3	मनोज जी मेहता का निवास, नाकोड़ा नगर, बड़ीसादड़ी, प्रतापगढ़ (राज.)	प्रकाश जी मेहता 9414619476 9784757565 विमल जी दलाल 9414619514
21	शासन दीपिका साध्वी श्री निष्ठा श्री जी म.सा.	4	मनोज जी मेहता का निवास, नाकोड़ा नगर, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रकाश जी मेहता 9414619476 9784757565 विमल जी दलाल 9414619514	22	शासन दीपिका साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा.	4	भैरुलाल जी गुर्जर का निवास, गंगाखेड़ा, भीलवाड़ा (राज.)	धनपत जी नाहर 9414262235 8619228386
23	शासन दीपिका साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा.	3	स्कूल में, भाणुजा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रहलाद जी लोढ़ा 9929201607					
2. बीकानेर-मारवाड़ अंचल									
1	शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा.	5	पीरदान जी कांतिलाल जी पटवा का निवास, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 विमल जी सेठिया 9460172673	2	शासन दीपक श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा.	6	सेठिया कोटड़ी, मरोठी सेठिया मोहल्ला, ठंठेरा बाजार, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178

3	शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा.	3	सुराणा निवास, निर्मल जी छल्लानी के घर के सामने, पुरानी लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	4	शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, जोरावरपुरा, नोखा, बीकानेर (राज.)	ईश्वरचंद जी बैद 9413388645 उत्तमचंद जी बेताला 9460923785
5	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा.	9	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगडी चौक, बीकानेर (राज.)	कन्हैयालाल जी बैद 9166211111 राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310	6	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवर जी म.सा.	4	समता भवन केन्द्रीय कार्यालय, जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
7	शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा.	4	समता भवन, भैरूंजी मंदिर के पास, महाजन बास, अलाय, नागौर (राज.)	प्रदीप जी चौरड़िया 9414117904 सुमित जी सुराणा 9558807777	8	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभा श्री जी म.सा.	5	अखिलेश सिंह जी का निवास, बडली, जोधपुर (राज.)	नेमीचंद जी पारख 9414133188 अखिलेश सिंह जी 9772196736
9	शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा.	3	148, लाभचंद बोहरा का निवास, घरवाला झाब, पाली (राज.)	अशोक जी श्रीश्रीमाल 9414120829	10	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा.	5	बोथरा निवास, करणी माता मंदिर के सामने, सुराणा मोहल्ला, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
11	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा श्री जी म.सा.	3	पौषधशाला भवन, उदयरामसर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	12	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभा श्री जी म.सा.	5	प्रसन्न जी फोपलिया का निवास, जालम विलास पोल के बाहर, पावटा बी रोड, जोधपुर (राज.)	अरुण जी चोपड़ा 9828426000
13	शासन दीपिका साध्वी श्री विकास श्री जी म.सा.	9	जीतू जी भंसाली का निवास, सरस्वती नगर, जोधपुर (राज.)	अरुण जी चोपड़ा 9828426000	14	शासन दीपिका साध्वी श्री पूजिता श्री जी म.सा.	4	सम्बोधि धाम जैन मंदिर, कायलाना रोड, जोधपुर (राज.)	नेमीचंद जी पारख 9414133188
15	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा.	3	शासकीय स्कूल, बामनवाली, बीकानेर (राज.)	रामूराम जी सरपंच 8003659453	16	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा.	3	बांठिया भवन, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
17	शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा.	3	बोथरा कोटड़ी, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	18	शासन दीपिका साध्वी श्री जयामि श्री जी म.सा.	3	जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखामंडी, बीकानेर (राज.)	ईश्वरचंद जी बैद 9413388645 उत्तमचंद जी बेताला 9460923785
3. जयपुर-ब्यावर अंचल									
1	श्री नरेन्द्र मुनि जी म.सा.	6	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटीकान हथाई के पास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477	2	शासन दीपक श्री हेमन्त मुनि जी म.सा.	2	ज्ञानचंदजी कमल कुमार जी श्रीश्रीमाल का भवन, प्रताप कॉलोनी, ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477

3	शासन दीपक श्री चिन्मय मुनि जी म.सा.	3	श्रीलाल समता भवन, गुरुद्वारा रोड, सवाई माधोपुर शहर (राज.)	उच्छबचंद जी जैन 8432688520 नरेंद्र कुमार जी जैन 9460951700	4	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा.	3	रामकरण जी यादव का निवास, पाटन, अजमेर (राज.)	कमलेश जी चौपड़ा 9828210721
5	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवर जी म.सा.	6	कांकरिया डेलान, नयाबास ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477	6	शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा.	5	समता भवन, महारानी फार्म, गायत्री नगर, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600
7	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. (कानोड़ वाले)	3	महावीर भवन, गुरुद्वारा रोड, सवाई माधोपुर (राज.)	उच्छबचंद जी जैन 8432688520 नरेंद्र कुमार जी जैन 9460951700	8	शासन दीपिका साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा.	5	डागा फार्म हाउस, भाकरोटा, जयपुर (राज.)	मुकेश जी जारोली 9351149600
9	शासन दीपिका साध्वी श्री सुजाता श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, सी–314, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	10	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वी श्री जी म.सा.	4	स्वाध्याय भवन, 79, महावीर कॉलोनी, अजमेर (राज.)	सुशील जी लोढ़ा 7014162660
5. छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपक श्री अक्षयमुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, बागबाहरा, नुआपाड़ा (उड़ीसा)	सज्जनसिंह जी जैन 9165585050	2	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.	2	जैन भवन, मलकानगिरी (उड़ीसा)	कन्हैयालाल जी सुराणा 9437196845
3	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.	8	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	राजेंद्र जी श्रीश्रीमाल 9300330075 प्रदीप जी बोथरा 9424119340	4	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (भीनासर वाले)	8	जैन भवन, दल्लीराजहरा, बालोद (छ.ग.)	अंकित जी गुणधर 9755685556
5	शासन दीपिका साध्वी श्री सौम्यशीला श्री जी म.सा.	3	राजेन्द्र जी साहू का निवास, कुरमातराई, धमतरी (छ.ग.)	राजेंद्र जी साहू 9399077637					
6. कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा.	2	पारसमल जी विजेंद्र जी रामेश जी दिलीप जी पितलिया का निवास, बरकतपुरा, काचीगुड़ा, हैदराबाद (तेलंगाना)	रमेश जी पितलिया 9885009003 विजय कुमार जी मुणोत 9989311090 कांतिलाल जी पितलिया 9392414084	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा श्री जी म.सा.	4	सालेचा स्वाध्याय भवन, गंगावती, बेल्लारी (कर्ना.)	अभिषेक जी गुलेच्छा 9741624733
3	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा.	4	स्कूल भवन, गागलूर, कोप्पल (कर्ना.)	सुरेश जी जैन 9448223687	4	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा.	4	नित्यानंद आश्रम, वड्डानाहल्ली, हिरियुर (कर्ना.)	संदीप जी जैन 9342336464

5	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा.	3	भारतेश जी ओस्तवाल की बिल्डिंग, पहला माला, 18वाँ क्रास, मलेश्वरम्, बेंगलुरु (कर्ना.)	नवरतन जी कोठारी 9845463536 कनकराज जी चौरड़िया 9341249923					
8. मुम्बई-गुजरात अंचल									
1	शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा.	3	जैन मंदिर परिसर, विनय नगर, मीरा रोड (ईस्ट), मुंबई (महा.)	शकेंद्र जी छाजेड़ 9869651177	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)	5	अशोक जी बोथरा का निवास, परिष्कार–1, खोखरा सर्किल, अहमदाबाद (गुज.)	अशोक जी बोथरा 9775726363 9978337011 मोहन जी बोथरा 9825581229
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमन प्रभा श्री जी म.सा.	4	तेरापंथ भवन, डूंगरी, नवसारी (गुज.)	बलवंत जी गाँधी 9712452121	4	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा.	3	विहार धाम, वरेडिया, भरूच (गुज.)	विहार धाम 8469335120
5	शासन दीपिका साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञा श्री जी म.सा.	3	मकान नंबर 47/बी, अशोक जी मेड़तवाल, एकता पार्क सोसायटी, खारावाला फैक्ट्री के सामने, ईशनपुर, अहमदाबाद (गुज.)	मोहन जी बोथरा 9825581229					
9. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री पदम मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, मुक्ताईनगर, जलगाँव (महा.)	सागर जी भण्डारी 9422282251	2	शासन दीपक श्री सुबाहु मुनि जी म.सा.	2	वर्धमान जैन स्थानक भवन, दोंडाईचा, नंदुरबार (महा.)	राजमल जी बिनायकिया 9422350140
3	शासन दीपक श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, नांदुरा, बुलढ़ाना (महा.)	रविंद्र जी संचेती 8788681323	4	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताश्री जी म.सा.	3	गोविंदा जी ठोमरे का निवास, केलानगर, आकोला (महा.)	गोविंदा जी ठोमरे 8275341599
5	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभा श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा.	3	जूना जैन धर्म स्थानक, मनमाड़, नाशिक (महा.)	रिखबचंद जी ललवाणी 9850691782	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.	5	शासकीय स्कूल, पिपलवाड़ी, औरंगाबाद (महा.)	केसरीसिंह जी जायसवाल 9518567776
7	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म.सा.	3	विहार धाम, बालापुर, आकोला (महा.)	नैनेश भाई 9595397650	8	शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा.	3	विलास जी काटे का निवास, काटे बस्ती, येवला रोड, नाशिक (महा.)	रिखबचंद जी ललवाणी 9850691782
9	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.	4	गोलछा फार्म हाऊस, डोंगरगाँव से 3 किमी. आगे, नागपुर (महा.)	राजेंद्र जी बैद 9960695111	10	शासन दीपिका साध्वी श्री शृंगार श्री जी म.सा.	5	जैन स्थानक भवन, नेर, वाशिम (महा.)	दयाचंद जी सावला 8554958682
10. बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.	4	मेघा फ्लेक्स, प्लास्टिक पॉलीपार्क, धुलागढ़ टोल, हावड़ा(प.ब.)	शांतिलाल जी पटवा 9831054882	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.	4	जैन उपाश्रय भवन, मुड़ाराई, बीरभूम (प.बं.)	सुशील जी जैन 9732141964

12. दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल									
1	शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा.	3	सुशील जी लूणावत का निवास, सेक्टर–46, गुरुग्राम (हरियाणा)	रमेश जी गोलछा 9810074206 गौतम जी बोथरा 8454046332	2	शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म.सा.	2	एस.एस. जैन सभा भवन, रोरी, सिरसा (हरियाणा)	पूनमचंद जी सुराणा 9351092281
3	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांत श्री जी म.सा.	4	एस.एस. जैन सभा भवन, रामामंडी, बठिंडा (पंजाब)	राजेश जी जैन 9815739711 पूनमचंद जी सुराणा 9351092281	4	शासन दीपिका साध्वी श्री समया श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, बिनोली, बागपत (उ.प्र.)	योगेश जी जैन 9997628808

श्रमणोपासक

क्या हमने कमाई धर्म-दलाली !

संसार की असारता का बोध होना और भगवान महावीर द्वारा दिखाए गए दिव्य मार्ग की ओर बढ़ना मोहांध, कामी और भौतिक सुखों की चाह रखने वाले जीव के लिए संभव नहीं है। ऐसे जीव जन्म से मरण तक की यात्रा इस प्रकार पूर्ण करते हैं जैसे वे केवल जन्म-मरण का चक्र बढ़ाने के लिए ही इस संसार में आए थे। यदि थोड़ा-सा भी पुण्योदय हो तो जीव को संयम मार्ग पर बढ़ने के भाव प्रकट हो सकते हैं।

परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में दीक्षाओं के ठाठ लग रहे हैं। द्वय महापुरुषों के दृढ़ संयमी जीवन से अभिप्रेरित होकर अनेकानेक भव्यात्माओं ने संयम मार्ग अंगीकार किया है। इसका अर्थ है कि इन महानुभावों को मनुष्य एवं अन्य योनियों का अंतर प्रत्यक्ष में आत्मसात् है।

हम सभी सुज्ञ हैं, फिर भी इस संसार के झूठे प्रपंचों में फँसे हुए नित नया कर्मबंध कर रहे हैं। यही नहीं हमारे आस-पास, हमारे परिवार-रिश्तेदारों में अनेक लोग ऐसे हैं जो कर्मबंध से दूर होना चाहते हैं, लेकिन उन्हें सही मार्ग नहीं मिल रहा है। हमें जरूरत है ऐसे लोगों को पहचान कर उन्हें आचार्य श्री रामेश की शरण दिलाने की।

अब कब जागेंगे इस मोहरूपी चिरनिद्रा से और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करेंगे? यदि हमको मनुष्य योनि का अन्य योनियों से अंतर पता है तो उसका परिचय कब देंगे? क्यों हम कदम बढ़ा नहीं रहे और क्यों अन्य को इस हेतु प्रोत्साहित नहीं कर रहे हैं? इसी आत्मकल्याण रूपी प्रवाह के अंतर्गत '**महत्तम महोत्सव**' मनाया जा रहा है, जो कि कर्मनिर्जरा का अद्भुत प्रसंग उपस्थित कर रहा है। अत: आप सभी पाठकों से सविनय निवेदन है कि धर्म की इस शृंखला में स्वयं भी जुड़ें, अधिकाधिक जुड़ें तथा औरों को भी जोड़ने का भरसक प्रयास करें।

-श्रमणोपासक टीम

आओ मनाएँ 'महत्तम महोत्सव'

हम सभी के आराध्य, नाना गुरु के राम, परमागम रहस्यज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ (स्वर्ण) दीक्षा दिवस *माघ सुदी 12 संवत् 2081, दिनांक 09 फरवरी 2025* को है। इस पावन अवसर के स्वागत हेतु संघ द्वारा आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव *'महत्तम महोत्सव'* आयाम के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया, जिसका शुभारंभ 13 जुलाई 2022 को हुआ। इस आयाम के नौ बिंदुओं के अन्तर्गत लगभग प्रत्येक साधुमार्गी परिवार के सदस्य धर्माराधना एवं ज्ञानार्जन से अपना जीवन धन्य बना रहे हैं।

इस पावन अवसर के उपलक्ष्य में हमारा यह प्रयास है कि श्रमणोपासक के आगामी अंक आचार्य श्री रामेश के जीवन पर आधारित हों, जिनमें उनकी दीर्घ कठोर संयम साधना, चारित्र, दीक्षाओं के प्रसंग, संघ एवं समाज के उत्थान के लिए उनके द्वारा किए गए अनमोल आयाम, जन-मन को पावन करते उनके मार्गदर्शन आदि से संबंधित सामग्री समाहित करने का प्रयास रहेगा। ऐसे किसी विशेष प्रसंग की जानकारी या कोई संस्मरण आपके पास हो तो शीघ्र ही साफ अक्षरों में लिखकर श्रमणोपासक टीम को भिजवाने का कष्ट करें ताकि वह सामग्री आगामी अंकों में प्रकाशित कर उसे संघ व समाज हित में सभी से साझा किया जा सके।

आप अपनी रचनाएँ व्हॉट्सएप 9314055390 व email : news@sadhumargi.com के माध्यम से भेज सकते हैं।

– सह-सम्पादिका

श्रमणोपासक के बाल पाठकों के लिए नववर्ष पर एक सुनहरा अवसर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक में '**बालसुलभ भाव**' नाम से नवीन कॉलम की शुरुआत की जा रही है। इस हेतु बच्चों द्वारा स्वलिखित रचनाएँ उनके नाम के साथ प्रकाशित की जाएगी। यह क्रम प्रतिमाह के धार्मिक अंक में रहेगा। तो उठाइए अपनी कलम और गुरु, धर्म, संस्कार, समर्पण, संघ विषयक लेख, कविता, कहानी, रूपक हिंदी व अंग्रेजी भाषा में लिखकर हमें अतिशीघ्र ही व्हॉट्सएप नं. 9314055390 एवं ईमेल : news@sadhumargi.com पर भिजवा दें।

–श्रमणोपासक टीम

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री रिया जी डागा

नाम : मुमुक्षु सुश्री रिया जी डागा
जन्म स्थान : बीकानेर (राज.) निवास स्थान : कोलकाता (प.बं.)
जन्म तिथि : 29 मार्च 2001
वैराग्यकाल : लगभग 4 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा : बी.कॉम. (ऑनर्स), सी.ए. फाइनलिस्ट
धार्मिक अध्ययन : श्री दशवैकालिक सूत्र 1-6 अध्ययन, सुखविपाक सूत्र, श्री उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, पुच्छिंसु णं, उववाई सूत्र (22), **थोकड़े-** श्री भगवती सूत्र, श्री प्रज्ञापना सूत्र, कर्मग्रंथ के कुछ थोकड़े, तत्त्वार्थ सूत्र
धार्मिक शिक्षा : आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ : जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-9, जैन सिद्धान्त मनीषी 1-4, जैन स्तोक कोविद, जैन संस्कृत प्रात भूषण, कर्मसिद्धांत (भाग-3)
संभावित दीक्षा तिथि : 22 जनवरी 2024

पारिवारिक परिचय

पड़दादा जी-दादी जी : स्व. श्री आनंदमल जी-स्व. श्रीमती जतनदेवी डागा
दादा जी-दादी जी : स्व. श्री दीपचंद जी-स्व. श्रीमती धुड़ीदेवी डागा
छोटे दादा जी-दादी जी : स्व. भी बुलाकीचंद जी-स्व. श्रीमती अमरावदेवी, श्री किशनलाल जी-स्व. राजादेवी, श्री शांतिलाल जी-स्व. सुशीलादेवी डागा
पिता जी-माता जी : लालचंद जी-मधु जी डागा
बड़े पिता जी-माता जी : स्व. श्री जेठमल जी-विजयाकँवरी जी, माणकचंद जी-पुष्पादेवी, चंद्रप्रकाश जी-मंजूदेवी, भागीचंद जी-विजयलक्ष्मी जी, मूलचंद जी-जयसुंदरी जी डागा
बहिन-बहिनोई : प्रिया जी-धुविक जी सेठ
भुआ जी-फूफा जी : सुशीलादेवी-स्व. श्री जयचंदलाल जी दस्साणी, सरलादेवी-स्व. श्री भंवरलाल जी सेठिया, शशिकला जी-स्व. श्री सुरेंद्र कुमार जी सेठिया
नाना जी-नानी जी : स्व. श्री धर्मचंद जी-स्व. श्रीमती गुलाबदेवी नाहटा (स्व. श्री अगरचंद जी नाहटा 'साहित्यकार' परिवार)
मामा जी-मामी जी : स्व. श्री राजेंद्र कुमार जी-रजनी जी नाहटा
मौसी जी-मौसा जी : अर्चना जी-मुकेश जी बांठिया, राखी जी-वीरेंद्र जी बांठिया
परिवार से दीक्षित : साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय भुआ जी की सुपुत्री)
साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय भुआ जी की सुपुत्री)
साध्वी श्री सुश्रिया श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय भुआ जी की सुपुत्री)
साध्वी श्री शशांक श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय भुआ जी)

।। जय गुरु नाना ।।

।। जय महावीर ।।

।। जय गुरु राम ।।

राम चमकते भानु समाना

कार्यसमिति बैठक

20 जनवरी, 2024 (शनिवार)
जावद (म.प्र.)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर 12.15 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

दोपहर 12.15 बजे से

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्या

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रभारी, राष्ट्रीय एवं आंचलिक प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय संघ/शाखा अध्यक्ष, लीड मेम्बर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर 12.15 बजे से

—* निवेदक *—

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति | श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

संयुक्त सत्र
जावद (म.प्र.)

महत्तम महोत्सव
आध्यात्मिक स्नेह सम्मेलन

20 जनवरी, 2024
शाम 7 बजे से

महत्तम महोत्सव

आमंत्रित

श्रीसंघ, महिला समिति, समता युवा संघ पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य एवं स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री

आमंत्रित

मध्यप्रदेश अंचल की तीनों इकाइयों के अध्यक्ष व मंत्री तथा महत्तम महोत्सव प्रमुख व क्षेत्रीय प्रतिनिधि

—* निवेदक *—

राष्ट्रीय महामंत्री | राष्ट्रीय मंत्री, मध्य प्रदेश अंचल

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

लीडरशिप ओरियन्टेंशन प्रोग्राम

जावद (म.प्र.)

णमोत्थु णं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं

21 जनवरी, 2024

प्रातः 9 बजे से

आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

—* निवेदक *—

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh